Subject - उर्दू Chapter-एकता ایکتا Class - 6th

Topic - एकता का मक़सद S.N. - 23

मिशन शिक्षण संवाद

نظم ایکتا

وہ پورب ہو یا پچھم ہو پھولوں
کی مہک تو ایک سی ہے
ہر بیج خزانہ ہوتا ہے
ہر مٹی سونا ہوتی ہے
ہر سا گرامر ساگر ہیں
ہر سیپ کے دل میں موتی ہے
بکھرے ہوئے تارے لاکھ سہی پر
ان کی چمک تو ایک سی ہے
وہ پورب ہو یا پچھم ہو پھولوں کی
مہک تو ایک سی ہے۔

वो पूरब हो या पश्चिम फूलों की
महक तो एक सी है
हर बीज ख़ज़ाना होता है,
हर मिट्टी सोना होती है,
हर सागर अमृत सागर है,
हर सीप के दिल में मोती है,
बिखरे हुए तारे लाख़ सही
पर उनकी चमक तो एक सी है,
वो पूरब हो या पश्चिम फूलों की
महक तो एक सी है ।

نظم کا خلاصہ

नज़्म का ख़ुलासा (सारांश)

بچوں آج ہم نظم ایکتا کو پڑھیں گے۔ جس کو جناب شاز تمکنت نے قلم بند کیا۔ شاز تمکنت نئ نسل کے شاعروں میں بہت اہمیت رکھتے ہیں۔ اس نظم میں انہوں نے ایکتا کی خوبیوں پر روشنی ڈالی ہے اور وہ اس نظم کے ذریعے یہ پیغام دے رہے ہیں کی ہم سب ایک ہیں۔

बच्चों आज हम इस सबक में नज़्म एकता को पढ़ेंगे जिस को जनाब शाज़ तम्कनत ने लिखा है|इस नज़्म के ज़रिये वो हमें एकता की खूबियों के बारे में बता रहे है की हम सब अलग अलग मज़हब के बावजूद एक ही इंसान है और हम सब एक है वो इस नज़्म में हमें बता रहे है की हम दुनिया में कहीं भी चले जाये फूलों के महक,मिट्टी का रंग, सागर का पानी, सीप का मोती सभी एक जैसे है आसमान में जितने तारे है उन सब की चमक एक है उसी तरह हम सब इंसान एक है सब आपस में भाई भाई है|नज़्म की इन पंक्तियों से हमें एकता प्यार और भाईचारे का पैग़ाम (संदेश) मिल रहा है |

सवाल سوال 👇

अभ्यास कार्य 👇

✍سوال1۔شاعر بیج, مٹی, ساگر اور سیپ کے بارے میں کیا کہتا ہے؟

✍سوال2۔ شاعر نظم کے ذریعے کیا پیغام دے رہا ہے؟

✍सवाल1.. शायर बीज, मिट्टी, सागर और सीप के बारे में क्या कहता है?

✍सवाल2.. शायर इस नज़्म के ज़रिये क्या पैग़ाम (संदेश) दें रहा है?

आओ जाने 👇

उर्दू भाषा में चारों दिशाओं के नाम निम्नांकित हैं ... |

मशरिक =पूर्व

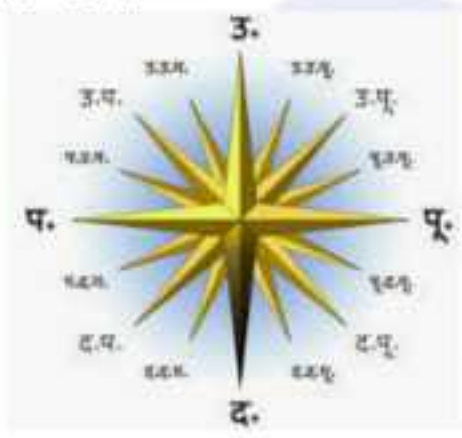

मगरिब =पश्चिम

शुमाल =उत्तर

जनूब=दक्षिण

सही मिलन करो

1-پورب पूरब..... जनूब جنوب
2- پچھم पश्चिम....... मशरिक़ مشرق
3- عطر उत्तर......... मग़रिब مغرب
4-دچھڑ दक्षिण .... शुमाल شمال

9458278429

Made by- ***Nadiya naqvi***

نظم کا خلاصہ

بچوں آج ہم نظم ایک لڑکا کا دوسرا حصہ پڑھ لیں گے۔ اس سے میں شاعر ہم سے کہہ رہا ہے کہ کی خدا نے ہمیں ایک ہی آسمان دیا ہے ایک ہی زمین دی ہے ایک ہی سورج دیا ہے اور ایک ہی چاند بنایا ہے اور اس کی روشنی ہم سب کے لئے ہے ہم کسی بھی دساں میں چاہے چلے جائیں ان کی روشنی اور گرم ایک ہی رہتا ہے۔ آخری بند میں شاعر ہم سے کہہ رہے ہیں کہ اگر ہم خوش ہوتے ہیں تو ہمارا دل بھی خوش رہتا ہے اور اگر ہمارے پاس دکھ آتا ہے تو ہماری آنکھیں بھر آتی ہیں لیکن یہ سکھ اور دکھ ہماری زندگی کے ساتھ ہی رہتا ہے اس لیے ہمیں ہمیشہ ایک ساتھ مل کر رہنا چاہیے۔ آخر میں شاعر پودوں کی مثال دیتے ہوئے کہتے ہیں کہ پودے تو بہت سارے ہوتے ہیں مگر ان کی لچک ایک سی ہوتی ہے اس لئے ہم سب کو ایک ساتھ پیار سے رہنا چاہیے۔

नज़्म का ख़ुलासा (सारांश)

आज हम नज़्म का दूसरा और आखरी हिस्सा पढ़ेंगे इस नज़्म में कवि ने हमें एकता की ख़ूबी के बारे में बतया है कवि कहता है की जिस तरह से हम सब के लिए एक ही आसमान, एक ही ज़मीं, एक ही सूरज की किरणें और एक की चाँद की रौशनी है तो हम सब अलग अलग ना रहे एक साथ रहे हम किसी भी दिशा में चले जाए ये दुनिया एक ही रहेगी जिस तरह फूल की महक एक रहती है उसी तरह हम सब भी एक है| आखरी में कवि कहते है की जिस तरह से सुख में हम खुश हो जाते है और दु:ख में हम परेशान, सुख और दु:ख दोनों साथ रहते है और जिस तरह से बहुत से पौधे होते है मगर उन की लचक एक ही रहती है इस लिए यदि हम सब एक साथ होंगे तो हम खुश रहेंगे. क्यूंकि एकता में ही बल है.

دوسرا حصہ نظم ایکتا

سب ایک گگن کے متوالے
سب ایک زمین کے پالے ہیں
سب ایک ہی سورج کی کرنیں
سب ایک ہی چاند کے ہالے ہیں
وہ اتر ہو یا دکھن ہو سب
رنگ۔دھنک تو ایک سی ہے
وہ پورب ہو یا پچھم ہو
پھولوں کی مہک تو ایک سی ہے
سکھ ہو تو دل کھل جاتے ہیں
دکھ ہو تو آنکھ بھر آتی ہے
دکھ سکھ کی دنیا ایک ہی ہے
تفریق دھری رہ جاتی ہے
پودے تو ہزاروں ہوتے ہیں ٹہنی
کی لچک تو ایک سی ہے
وہ پورب ہو یا پچھم ہو پھولوں
کی مہک تو ایک سی ہے

सब एक गगन के मतवाले
सब एक ज़मीं के पाले
सब एक ही सूरज की किरणें
सब एक ही चाँद के हाले है
वो उत्तर हो या दखिन हो सब
रंग धनक तो एक सी है
वो पूरब हो या पश्चिम
फूलो की महक तो एक सी है |
सुख हो तो दिल खिल जाते है
दु:ख हो तो आंख भर आती है
दु:ख सुख की दुनिया एक सी है
तफ़रीक़ धरीं रह जाती है
पौधे तो हज़ारों होते है
टहनी की लचक तो एक सी है |
वो पूरब हो या पश्चिम
फूलों की महक तो एक सी है |

जवाब **पेज 23 के जवाब**

✍جواب 1۔ شاعر نے بیج کو خزانہ۔ موتی کو سونا, ساگر کو امرت اور سیپ کا موتی کہاں ہے۔

✍جواب 2۔ شاعر نظم کے ذریعے ایکتا کا پیغام دے رہا ہے۔

सही मिलान-صحیح املان

1۔پورب۔۔مشرق
2۔پچھم۔۔۔مغرب
3۔اتر۔۔۔۔۔۔شمال
4۔دکھن۔۔۔جنوب

बच्चों इस नज़्म को ज़बानी याद करो और सब तक एकता का पैग़ाम पहुँचाओ|

ज़रूरी नोट. एकता में बल है
ایکتا میں طاقت ہے

9458278429
Made by- ***Nadiya naqvi***

Subject - उर्दू Chapter-उर्दू व्याकरण Class - 6th

Topic - उर्दू व्याकरण ضمیر S.N. - 25

मिशन शिक्षण संवाद

उर्दू व्याकरण

قواعد۔

ضمیر

आज हम उर्दू व्याकरण में ज़मीर के बारे में पढ़ेंगे।

وہ کلمہ ہے جو کسی شخص یا چیز کے نام کی جگہ استعمال کیا جائے۔
جیسے۔عرفان کل وہاں گیا اور وہ کل ہی واپس آ گیا۔

ज़मीर वो कलमा है जो किसी शख्स या चीज़ के नाम की जगह इस्तेमाल (प्रयोग)किया जाए |जैसे:-इरफ़ान कल वंहा गया और वो कल ही वापस आ गया इस वाक्य में इरफ़ान की जगह वो का प्रयोग भी किया गया है यही ज़मीर होता है, जैसे वो, वह, उसने आदि,

निचे लिखें वाक्य में से ज़मीर अलग करो |

1.सीता सुबह स्कूल गई और वो वंहा से बाजार गई |

2.. राम कल वंहा गया और वो कल ही वापस आ गया |

3.उसने खाना कहा लिया|

आज की गतिविधि 👇

واحد اور جمع الگ الگ کر کے لھکو۔

यंहा पर कुछ वाहिद(एकवचन)और जमा(बहुवचन) ढूंढ कर लिखो |

1- مولی	1- مولیاں
2- مرغا	2- مرغے
3- کرسی	3- کرسیاں
4- کھڑکی	4- کھڑکیاں
5- گڑیا	5- گڑیاں
6- پتہ	6- پتی
7-- بلی	7- بلیاں

👇 ज़रूरी जानकारी 8ضروری معلومات

اسم اگر اکیلا ہے تو اسے واحد کہتے ہیں اور اگر ایک سے زیادہ ہے تو, جمع, کہتے ہیں ۔مثلاً۔چڑیا۔گھوڑا۔ستارا۔واحد ہیں چڑیاں,گھوڑے,ستارے جمع ہیں۔

इसम अगर अकेला हो तो वाहिद (एकवचन) होता है और अगर एक से अधिक हो तो जमा (बहुवचन)होता है

9458278429

Made by- Nadiya Naqvi

तनयं पाठय तनयां पाठय
शिक्षय नीतिं दोषं वारय ।
कुरूपकारम्, कृत्यमुदारम्
अपनय दूरे चित्तविकारम् ।3।

सन्दर्भ-प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'संस्कृत पीयूषम्' के 'उद्बोधनम्' शीर्षक से चयनित हैं।

श्लोक 3 अर्थ:- पुत्र को पढ़ाओ पुत्री को पढ़ाओ।नीति की शिक्षा देकर दोष को दूर करो। उपकार करो, उदार कार्य करो, मन के दोष को दूर करो।

मा पिब किञ्चिद् वस्तु निषिद्धम्
मा भज दुर्व्यसनं प्रतिषिद्धम्।
मा नय पलमपि व्यर्थ समयम्
कुरु जगदीश्वर-चिन्तनभयम् ।4।

सन्दर्भ-प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'संस्कृत पीयूषम्' के 'उद्बोधनम्' शीर्षक से चयनित हैं।

अर्थ:

जिसके लिये मनाही ही, जो न करने योग्य हो ऐंसी किसी वस्तु को मत पियो।बुरी आदतों को छोड़ दो।समय को व्यर्थ में न गवाओं।जगत पालक ईश्वर का चिंतन करो और निर्भय हो जाओ।

अभ्यास कार्य

1. चित्र के अनुसार संस्कृत में वाक्यों की रचना करो:

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
तनयं	पुत्र
तनयां	पुत्री
पाठय	पढ़ाओ
वारय	दूर करो
चित्त	मन
अपनय	हटाओ
पिब	पीना

उत्तर अंक 20

1. सत्य , संपन्न

3.आम्रम्,पनसम्,सेवम्,द्राक्षा,मण्डपी, नारंगम,कर्कटी,दाड़िमम् ,आमलकम्, बदरी

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- सचिन कुमार, सम्भल... 9761261066

विषय- **संस्कृत** पाठ- **मम् विद्यालय** कक्षा - **6**

प्रकरण- क्रमांक- **24**

मिशन शिक्षण संवाद

संकेत :उषा-चेतने............अपि अस्ति।

सन्दर्भ- हमारी पाठ्य पुस्तक 'संस्कृत पीयूषम्' के 'मम विद्यालय:' शीर्षक से चयनित हैं।

हिन्दी अनुवाद:-

उषा- चेतना।तुम्हारा विद्यालय कहाँ है?

चेतना- मेरा विद्यालय यहाँ इसी नगर में है।वहाँ एक सुंदर पुस्तकालय है और एक बड़ा खेल का मैदान है।

उषा- ठीक है।तुम्हारे विद्यालय के पुस्तकालय में कैसी पुस्तकें हैं।

चेतना- मेरे विद्यालय के पुस्तकालय में विविध विषयों की पुस्तकें हैं।

उषा- बहुत अच्छा। तुम्हारे विद्यालय में कितने शिक्षक हैं।

चेतना- मेरे विद्यालय में पांच शिक्षक हैं। वह सभी महर्षि तुल्य, कर्तव्य परायण और शिष्यवत्सल हैं।

उषा- क्या तुम्हारे विद्यालय में बगीचा भी है।

चेतना- मेरे विद्यालय में एक सुंदर बगीचा है।जहाँ मनोहर पुष्प खिलते हैं।

उषा- तुम्हारे विद्यालय में और क्या है? चेतना- मेरे विद्यालय में एक कंप्यूटर कक्ष भी है।

अभ्यास कार्य

अभ्यास कार्य

1.खाली स्थानों की पूर्ति कीजिये।

क. विद्यालय:----------अस्ति।

ख.तत्र एक: सुंदर:------अस्ति।

ग.उद्याने मनोहराणि-----विकसन्ति।

घ.विद्यालये सुंदरम्------अस्ति।

2.तव विद्यालये कति शिक्षका: सन्ति?

3.तव विद्यालये कुत्रास्ति?

उत्तर अंक 23

1. बालकः खादति।
2. मा वद मिथ्या।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
कति	कितने
तव	तुम्हारे
मम	मेरा
अत्र	यहाँ
समीचीनी	बहुत अच्छा
क्रीड़ा	खेल
सन्ति	हैं
संगणककक्ष	कम्प्यूटर कक्ष
पञ्च	पाँच
कीदृशानि	कैसी

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- सचिन कुमार, सम्भल... 9761261066

विषय- संस्कृत पाठ- गतिविधि कक्षा - 6

प्रकरण- शब्द रूप (अस्मद्) क्रमांक - 25

मिशन शिक्षण संवाद

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

उत्तर अंक- 24

(क) नगरे (ख)पुस्तकालयः

(ग)पुष्पाणि (घ)उद्यानम्

अभ्यास प्रश्न

1. अस्मद् की तरह युष्मद शब्द के रूप भी लिखिये।
2. युष्मद, अस्मद,सः शब्दो के हिन्दी अर्थ लिखिये।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- सचिन कुमार संभल

रचनात्मक गतिविधि

चित्र प्रदर्शन गतिविधि-

👉 कक्षा में पाठ से सम्बन्धित चित्र बनाकर या दिखाकर प्रत्येक बच्चे से उस चित्र के सम्बन्ध में एक-एक शब्द या वाक्य बोलने को कहा जाए।

👉 यथा- 'पुस्तकम्' या 'कन्दुकम्' दिखाने पर बच्चे रुचिपूर्वक अपनी समझ से उसके बारे में बताते हैं।

👉 बच्चे 'पुस्तकम्' या 'कन्दुकम्' को देखने पर छोटे-छोटे वाक्य बनाते हैं।

👉 अध्यापक उन वाक्यों को श्यामपट्ट पर लिखते रहेंगें।

👉 वाक्य की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिये।

👉 इससे बच्चे छोटे-छोटे वाक्य बनाना सीख जाते हैं।

गतिविधि से लाभ-

👉 कल्पना शक्ति का विकास।

👉 तर्क क्षमता का विकास।

👉 संस्कृत भाषा के ज्ञान का विकास।

👉 प्रकृति व पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होना।

👉 छोटे -छोटे वाक्य बनाना।

सचिन
9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम-

Subject- English **Lesson-7 Class-06**

Topic- The Honest Woodcutter **S.N.-** 23

मिशन शिक्षण संवाद

Once there was a woodcutter, who lived in a village. He was a very honest man. One day he was cutting wood with his axe. It was a very hot day. He felt thirsty and went to the river to drink water. His axe slipped accidentally from his hand and fell into the river. The woodcutter started crying.

Hindi translation

एक बार एक लकड़हारा था, जो एक गांव में रहता था। वह एक ईमानदार आदमी था। एक दिन मैं अपनी कुल्हाड़ी से लकड़ी काट रहा था। वह एक गर्म दिन था उसे प्यास लगी ,और वह नदी के किनारे पानी पीने गया। गलती से उसकी कुल्हाड़ी हाथ से फिसल कर नदी में गिर गई, और लकड़हारे ने रोना शुरू कर दिया।

Word meaning

Woodcutter– लकड़हारा
Honest– ईमानदार
Axe– कुल्हाड़ी
Accidentally– गलती से
Crying– रोने लगा
Slipped– फिसल गया

Homework

1. Answer the following questions :

a. What was the woodcutter doing?

b. How did his axe fall into the river?

Answers of sheet 22

1 a . We can do good for the society by helping others, maintaining cleanliness, planting tree and respecting elders.

b . Shubhi wants to give her old toys and clothes to the poor children because it is one of the ways to serve our country.

2. Opposite answer

Bad, disrespect,new, younger,dirty

Subject- English **Lesson-** 7 **Class-06**

Topic- The Honest Woodcutter **S.N.-** 24

मिशन शिक्षण संवाद

(The River Goddess heard his cry and felt pity on him, she came out of the water.)

Goddess: Why are you crying?

Woodcutter : My axe has fallen into the river. What will I do now? How will I earn for my family?

(The Goddess went into the water and came out with a golden axe.)

Goddess: Is this your axe gentleman?

Woodcutter : No, no; This is a golden axe but my axe was made of iron.

अनुवाद

(नदी की देवी ने उसका रोना सुना और उस पर दया आ गई वह पानी से बाहर आ गई)

देवी : तुम क्यों रो रहे हो?

लकड़हारा : मेरी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई है।अब मैं क्या करूँगा? मैं अपने परिवार के लिए कैसे कमाऊँगा?(नदी की देवी पानी में गई और सोने की कुल्हाड़ी लेकर बाहर आई।)

देवी : क्या यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है?

लकड़हारा : नहीं!नहीं!यह सोने की कुल्हाड़ी है परंतु मेरी पुरानी तो लोहे की है।

Homework

1 a . The woodcutter's axe was made of _____

(i) gold (ii) iron (iii) silver

b . _____ came out of the river.

(i) River God (ii) River Witch 2. Why did the woodcutter start crying?

3. Who came out of the wate River Goddess ?

4 .Write the opposite of these words- dishonest,cold,punish,come, laugh,sad

Word meaning

Pity– दया

Earn – कमाना

Golden – सोने की

Iron – लोहा

Answers of sheets 23

1 – The woodcutter was cutting wood with his axe, on a very hot day .

2–While he was drinking water from the river, his axe accidentally slipped from his hand and fell into the river.

9458278429

Made by- Pratibha sharma,Ups–Faridpur,Sambhal

परिवर्तन:-

हमारे चारों ओर बहुत से बदलाव होते रहते हैं, कुछ बदलाव स्वत: या अपने आप होते रहते हैं और कुछ मानव क्रियाकलापों द्वारा सम्पन्न होते हैं। पौधों का उगना, पत्तियों का रंग बदलना और सूख कर पेड़ों से गिर जाना, फूल का खिलना और मुरझाना, फल का पकना और पेड़ों से गिर जाना, मौसम में बदलाव (जैसे जाड़ा, गर्मी तथा बरसात) का होना, स्वत: ही सम्पन्न होने वाली क्रियाएँ हैं।

घर पर रसोई में गैस के चूल्हे को जलाना, दूध से पनीर बनाना, धूपबत्ती एवं मोमबत्ती को जलाना, दीपावली में पटाखे व फुलझड़ी को जलाना आदि मानव कृत्य क्रियाएँ हैं।

उपरोक्त उदाहरणों में आपने देखा कि कुछ क्रियाओं में वस्तु की अवस्था बदल रही है जैसे दूध से दही व पनीर बनना, फूल का मुरझाना आदि। कुछ वस्तुओं के रंग व गंध में बदलाव होता है तथा कुछ बदलाव प्रकृति में स्वत: ही हो रहा है। अत: इन उदाहरणों के आधार पर आप कह सकते हैं कि ***"वस्तु की अवस्था, आकार, रंग, स्वाद एवं गंध तथा प्रकृति में निरन्तर होने वाले बदलाव को परिवर्तन कहते हैं।"***

परिवर्तन के प्रकार:-

हमारे आस-पास प्रकृति में कई प्रकार के परिवर्तन होते हैं। उन्हें हम अलग-अलग नामों से परिभाषित करते हैं। परिवर्तनों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है -

1- मंद एवं तीव्र परिवर्तन
2- अनुकूल तथा प्रतिकूल परिवर्तन
3- नियमित तथा अनियमित परिवर्तन
4- प्रत्यावर्तित तथा अप्रत्यावर्तित परिवर्तन (उत्क्रमणीय तथा अनुत्क्रमणीय परिवर्तन)
5- भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तन
6- प्राकृतिक तथा कृत्रिम परिवर्तन
7- अनियंत्रित तथा नियंत्रित परिवर्तन
8- जटिल परिवर्तन

1- मंद एवं तीव्र परिवर्तन

दूध में दही की अल्प मात्रा मिलाने से दही का बनना तथा दूध में नीबू का रस डालकर फाड़ना, दोनों प्रक्रियाओं में हम देखते हैं कि दूध से दही बनने में अधिक समय लगता है जबकि दूध में नीबू का रस डालने पर दूध जल्दी फट जाता है।

जब किसी परिवर्तन के सम्पन्न होने में अधिक समय लगता है तो इन्हें धीमी या मंद गति से होने वाला परिवर्तन या मंद परिवर्तन कहते हैं।

जब किसी परिवर्तन के सम्पन्न होने में कम समय लगता है तो उसे तेज़ गति से होने वाला परिवर्तन या तीव्र परिवर्तन कहते हैं।

इसी प्रकार के परिवर्तनों को हम कुछ और उदाहरणों द्वारा भी समझ सकते हैं। जैसे - जल में नील घोलते ही विलयन का रंग नीला होना, माचिस का जलना, फूले गुब्बारे का फूटना आदि तीव्र गति से तथा नाखूनों का बढ़ना, बच्चों का बढ़ना, लोहे में जंग लगना व प्रात: काल सूर्य का पूरब में उदय होकर सायंकाल पश्चिम में अस्त होना धीमी गति से होने वाले परिवर्तन है।

◆ अभ्यास प्रश्न (क्रमांक-23) ◆

1) वस्तु की अवस्था, आकार, रंग, स्वाद एवं गंध तथा प्रकृति में निरन्तर होने वाले बदलाव को क्या कहते हैं?
2) परिवर्तन कितने प्रकार के होते हैं?
3) 'दूध से दही बनना' किस प्रकार का परिवर्तन है?
4) 'दीपावली में पटाखे का जलना' किस प्रकार का परिवर्तन हैं?
5) 'गुब्बारे का फूटना' किस प्रकार का परिवर्तन है?

◆ उत्तरमाला (क्रमांक-22) ◆

1) क्रोमैटोग्राफी
2) चुम्बकीय पृथक्करण विधि

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- अखिलेश कुमार, स०अ०, कम्पोजिट विद्यालय मखुनी, शिक्षा क्षेत्र-रानीपुर, जनपद-मऊ

मिशन शिक्षण संवाद

2. अनुकूल तथा प्रतिकूल परिवर्तन

आपने देखा कि हमारे चारों ओर होने वाले परिवर्तनों में बहुत अधिक विविधता है। इसी के आधार पर इन्हें उपयोगी और अनुपयोगी कहते हैं। खाना पकाना, आम का पकना, केले का पकना, दूध से दही और दूध से पनीर बनना,कुछ उपयोगी परिवर्तन हैं तथा रोटी में फफूँद लगना, दूध का फटना, लोहे में जंग लगना आदि अनुपयोगी परिवर्तन है।

उपयोगी तथा लाभदायक परिवर्तन अनुकूल परिवर्तन कहलाते हैं।

अनुपयोगी तथा हानिकारक परिवर्तन प्रतिकूल परिवर्तन कहलाते हैं।

एक ही परिवर्तन कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल हो सकता है, जैसे फसल तैयार होते समय वर्षा का होना अनुकूल है परन्तु फसल पक जाने पर बादलों का बरसना प्रतिकूल परिवर्तन है।

3. नियमित तथा अनियमित परिवर्तन

हम जानते हैं कि सृष्टि में कुछ परिवर्तन नियमित रूप से निश्चित समय पर होते रहते हैं, जैसे - ऋतुओं का बदलना, रात और दिन का होना आदि। कुछ परिवर्तन ऐसे होते हैं जिनका कोई निश्चित समय नहीं होता है और वे कभी भी हो सकते हैं, जैसे वर्षा का होना, आँधी, तूफान, बाढ़, सूखा, भूकम्प तथा सुनामी आदि का आना, ज्वालामुखी का फूटना आदि।

निश्चित समय पर लगातार होते रहने वाले परिवर्तन नियमित परिवर्तन कहलाते हैं।

वे परिवर्तन जिनका समय निश्चित नहीं होता है, अनियमित परिवर्तन कहलाते हैं।

4. प्रत्यावर्तित तथा अप्रत्यावर्तित परिवर्तन (उत्क्रमणीय तथा अनुत्क्रमणीय परिवर्तन)

एक गुब्बारा लीजिए और उसे सावधानीपूर्वक फुलाइए। जिससे कि वह फट न जाए। आप देखें कि गुब्बारा फूल कर बड़ा हो जाता है। अब उसकी हवा निकाल दीजिए। वह फिर अपनी पुरानी अवस्था में आ जाता है। गुब्बारे का फूलना एवं हवा निकाल देने से इसका पुन: अपनी पहली स्थिति में आ जाना एक प्रत्यावर्तित (उत्क्रमणीय) परिवर्तन है।

इसी प्रकार गुँथा आटा लेकर उसकी लोई बनाते हैं और लोई से एक रोटी बेलते हैं यदि रोटी के आकार से आप असंतुष्ट होते है। तो उससे पुन: लोई बना सकते हैं यह भी एक प्रत्यावर्तित परिवर्तन है।

ऐसे परिवर्तन जिसमें परिस्थितियाँ उलट देने पर पदार्थ वापस अपनी पूर्व अवस्था में आ जाते हैं, प्रत्यावर्तित परिवर्तन कहलाते हैं। जैसे - रबर बैण्ड या स्प्रिंग को खींचना और खींचकर छोड़ देना।

अब आटे की लोई से बेली हुई कच्ची रोटी को तवे पर सेंक लीजिए। क्या इस रोटी से आप आटे की लोई पुन: प्राप्त कर सकते हैं ? नहीं, इससे लोई नहीं बना सकते हैं। इसी प्रकार दूध से बने दही को पुन:दूध में नहीं बदला जा सकता है।

ऐसे परिवर्तन जिनमें पदार्थ पुन: अपनी पूर्व अवस्था में नहीं लाया जा सकता है, अप्रत्यावर्तित परिवर्तन कहलाते हैं। जैसे - दूध से दही का बनना, मोमबत्ती का जलना, धूपबत्ती का जलना आदि।

◆ अभ्यास प्रश्न (क्रमांक-24) ◆

1) उपयोगी तथा लाभदायक परिवर्तन क्या कहलाते हैं?
2) अनुपयोगी तथा हानिकारक परिवर्तन क्या कहलाते हैं?
3) क्या एक ही परिवर्तन कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल हो सकता है?
4) ऐसे परिवर्तन जिसमें परिस्थितियाँ उलट देने पर पदार्थ वापस अपनी पूर्व अवस्था में आ जाते हैं, किस प्रकार के परिवर्तन कहलाते हैं?
5) ऐसे परिवर्तन जिनमें पदार्थ पुन: अपनी पूर्व अवस्था में नहीं लाया जा सकता है, किस प्रकार के परिवर्तन कहलाते हैं?

◆ उत्तरमाला (क्रमांक-23) ◆

1) परिवर्तन
2) आठ प्रकार के
3) मंद परिवर्तन
4) तीव्र परिवर्तन
5) तीव्र परिवर्तन

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- अखिलेश कुमार, स०अ०, कम्पोजिट विद्यालय मखुनी, शिक्षा क्षेत्र-रानीपुर, जनपद-मऊ

मिशन शिक्षण संवाद

5. भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तन:-

• क्रियाकलाप •

दो चम्मच नमक लें, एक बीकर में थोड़ा पानी लेकर उसमें एक चम्मच नमक के क्रिस्टल को घोलें। अब इस घोल को तब तक गर्म करें जब तक कि सारा पानी वाष्पित न हो जाए। चित्र में क्या दिखाई देता है ?

बीकर की तली में पुन: सफेद पदार्थ दिखाई देता है। यह पदार्थ नमक है। इस प्रयोग में जल विलायक है, जिसमें नमक का मूल स्वरूप लुप्त हो गया। जल के वाष्पन द्वारा जल को हटाने पर नमक चूर्ण के रूप में प्राप्त होता है। इस क्रिया में नमक क्रिस्टलीय रूप से चूर्ण के रूप में परिवर्तित हो रहा है।

ऊपर के उदाहरण में परिवर्तन का कारण हटाने पर पुन: मूल पदार्थ प्राप्त होता है। कोई नया पदार्थ नहीं बनता। लेकिन रूप बदल गया है।

अत: ***ऐसा परिवर्तन जिसमें पदार्थ का रूप बदल जाता है परन्तु कोई नया पदार्थ नहीं बनता है, भौतिक परिवर्तन कहलाता है। भौतिक परिवर्तन के पश्चात सामान्यत: पदार्थ की पूर्व स्थिति पुन: प्राप्त की जा सकती है।***

लकड़ी के टूकड़े को जलायें। क्या देखते हैं ? लकड़ी के टुकड़े को जलाने पर राख बनती है, यह एक नया पदार्थ है। इसके गुण लकड़ी के टुकड़े से भिन्न हैं। यह परिवर्तन रासायनिक परिवर्तन है। मोमबत्ती का जलना भी एक रासायनिक परिवर्तन है।

ऐसा परिवर्तन जिसमें एक या एक से अधिक नया पदार्थ बनता है, रासायनिक परिवर्तन कहलाता है। रासायनिक परिवर्तन के पश्चात् सामान्यत: पूर्व पदार्थों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

6. प्राकृतिक तथा कृत्रिम परिवर्तन:-

• प्राकृतिक परिवर्तन •

मौसम तथा जलवायु परिवर्तन से आप सभी परिचित हैं। इसी प्रकार प्रकृति में कुछ परिवर्तन स्वत: होते रहते हैं, जैसे दिन रात का होना, वर्षा, आंधी, तूफान आदि। मौसम का बदलना, बादल का आना, वर्षा का होना, ज्वालामुखी का फूटना, भूकम्प का आना, ज्वार भाटा आना, आँधी, तूफान, बाढ़, सूखा पड़ना आदि प्राकृतिक परिवर्तन के कुछ उदाहरण हैं।

• कृत्रिम परिवर्तन •

आपने बढ़ई को लकड़ी से मेज, कुर्सी या तख्त बनाते देखा होगा। मिट्टी, सीमेन्ट, ईंटों से घर और इमारतें बनाते भी देखा होगा। यह सभी कार्य मनुष्यों द्वारा किये जा रहे हैं। अत: ये मानव कृत या कृत्रिम परिवर्तन हैं। दूध से दही, घी और क्रीम बनाना भी कृत्रिम परिवर्तन है। मनुष्य द्वारा किये गये परिवर्तन कृत्रिम परिवर्तन हैं।

◆ अभ्यास प्रश्न (क्रमांक-25) ◆

1) 'मोमबत्ती का पिघलना' किस प्रकार का परिवर्तन है?
2) 'मोमबत्ती का जलना' किस प्रकार का परिवर्तन है?
3) किस परिवर्तन के पश्चात् सामान्यत: पूर्व पदार्थों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है?
4) मौसम का बदलना, बादल का आना, वर्षा का होना, ज्वालामुखी का फूटना, भूकम्प का आना, ज्वार भाटा आना, आँधी, तूफान, बाढ़, सूखा पड़ना आदि किस प्रकार के परिवर्तन है?
5) मनुष्य द्वारा किये गये परिवर्तन को किस प्रकार का परिवर्तन कहते हैं?

◆ उत्तरमाला (क्रमांक-24) ◆

1) अनुकूल परिवर्तन
2) प्रतिकूल परिवर्तन
3) हाँ
4) प्रत्यावर्तित (उत्क्रमणीय) परिवर्तन
5) अप्रत्यावर्तित (अनुत्क्रमणीय) परिवर्तन

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- अखिलेश कुमार, स०अ०, कम्पोजिट विद्यालय मखुनी, शिक्षा क्षेत्र-रानीपुर, जनपद-मऊ

विषय-गणित पाठ- सांख्यिकी कक्षा - 6

प्रकरण- आँकड़े क्रमांक - 23

मिशन शिक्षण संवाद

हम टेलीविजन पर क्रिकेट का स्कोर बोर्ड देखते हैं। इस स्कोर बोर्ड में पूरे खेल में कौन, कितने रन से जीता या हारा, इस सूचना के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण और अति उपयोगी सूचनाएँ भी प्राप्त होती हैं। खिलाड़ियों में किसने, कितने रन बनाए और सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी ने कितनी गेंदों में रन बनाए, कुल कितना समय लिया के बारे में एक क्रिकेट मैच का स्कोर बोर्ड नीचे दर्शाया गया है।

इसी प्रकार हम अपने दैनिक जीवन में संख्याओं की सारणी के रूप में वस्तु और उसके मूल्य, रेल के आने-जाने का समय तथा बस के आने-जाने के समय आदि को सुरक्षित रखते हैं। ये सारणियाँ हमें आँकड़े (DATA) उपलब्ध कराती हैं।

आँकड़े

आँकड़े संख्याओं के वे संग्रह हैं जो कुछ सूचनाएँ देने के लिए एकत्रित किए जाते हैं। किसी निश्चित उद्देश्य से आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं।

आँकड़ों की विशेषताएँ-

उदाहरण 1-:

सभी जानते हैं कि किसी प्रदेश में प्रति हेक्टेयर गेंहूँ की उपज प्रतिवर्ष एक समान नहीं रहती है, बल्कि बढ़ या घट सकती है। इसी प्रकार एक प्रदेश में प्रति हेक्टेयर गेंहूँ की उपज और दूसरे प्रदेश में प्रति हेक्टेयर गेहूँ की उपज में अन्तर हो सकता है अर्थात् आँकड़े परिवर्तनशील होते हैं।

उदाहरण 2-:

मान लीजिए किसी कक्षा के एक छात्र के गणित, दूसरे छात्र के विज्ञान और तीसरे छात्र के अंग्रेजी विषय के प्राप्तांकों की तुलना करनी है, तो इससे कोई हल नहीं निकलेगा, किन्तु यदि तीनों छात्रों के द्वारा केवल किसी एक विषय गणित, विज्ञान अथवा अंग्रेजी के प्राप्तांकों की तुलना करनी हो तो इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उस विषय में किस छात्र की उपलब्धि अच्छी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सजातीय आँकड़े होने पर ही हम किसी हल पर पहुँच सकते हैं।

अभ्यास प्रश्न-

1.किसी मुहल्ले में 10 परिवारों में सदस्यों की संख्या निम्नवत् ज्ञात की गई :

6, 8, 3, 2, 4, 5, 9, 7, 3, 6.

आँकड़ों को आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए ।

उदाहरण 3-:

मान लीजिए कि किसी कक्षा में छात्रों की ऊँचाई का अध्ययन करना है तो इसके लिए कक्षा के सभी छात्रों की ऊँचाई ज्ञात करनी होगी और तभी विश्लेषण करके कोई अनुमान या निष्कर्ष निकाल सकते हैं। एक छात्र की ऊँचाई अर्थात् केवल एक आँकड़े से तुलना नहीं कर सकते, तुलना के लिए आँकड़े सदैव समूह में होने चाहिए।

उदाहरण 4-:

जो तथ्य संख्याओं में व्यक्त नहीं किये जा सकते उनका अध्ययन सांख्यिकी के अन्तर्गत हम नहीं कर सकते, जैसे ईमानदारी, मित्रता, चरित्र आदि।

निष्कर्ष :

आँकड़े परिवर्तनशील होते हैं । सजातीय आँकड़े होने पर ही तुलना करके निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं । आँकड़े सदैव समूह में एकत्र किये जाते हैं । आँकड़े सदैव संख्यात्मक राशि में होते हैं ।

आँकड़े का वर्गीकरण-:

1- ***आरोही क्रम-*** संख्याओं को छोटे से बड़े क्रम में रखना।

2- ***अवरोही क्रम-*** संख्याओं को बड़े से छोटे क्रम में रखना।

उत्तर माला कार्य पत्रक 22-

(क) 26, (ख) –240, (ग) 11, (घ) 165

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- कविता गुप्ता, अलीगढ़

विषय-गणित पाठ- सांख्यिकी कक्षा - 6

प्रकरण- आंकड़ों का संग्रह क्रमांक-24

मिशन शिक्षण संवाद

आँकड़ों का संग्रह

किसी समस्या के अध्ययन में अध्ययनकर्ता का सबसे पहला कार्य आँकड़ों का संग्रह करना है।

क्रियाकलाप :1

आइये हम अपनी कक्षा के शिक्षार्थियों के तीन समूह बनाते हैं । प्रत्येक समूह से निम्नांकित प्रकार के आँकड़ों में से एक प्रकार के आँकड़ों को एकत्रित करते हैं :

(i)अपनी कक्षा के दस शिक्षार्थियों की ऊँचाई,

(ii)किसी दिन दिये गये गृहकार्य को करके लाने वाले शिक्षार्थियों की संख्या,

(iii)किसी एक माह में प्रत्येक कार्यदिवस में उपस्थित रहने वाले अपनी कक्षा के शिक्षार्थियों की संख्या।

प्रथम समूह के शिक्षार्थियों ने स्वयं आँकड़े एकत्र किये जैसे - शिक्षार्थियों की ऊँचाई ज्ञात करना, दूसरे समूह के शिक्षार्थियों ने दूसरे स्रोतों से आँकड़े एकत्र किये । जैसे- उपस्थित शिक्षार्थियों की संख्या अपनी कक्षा की उपस्थिति पंजिका से प्राप्त किये।

अत: आँकड़ों का संग्रह दो प्रकार से किया जाता है :

(i)प्राथमिक स्रोतों से

जिन स्रोतों से प्रथम बार आँकड़े एकत्र किये जाते हैं उन्हें प्राथमिक स्रोत कहते हैं

(ii) द्वितीयक स्रोतों से

जिन स्रोतों से पहले से उपलब्ध आँकड़ों से वांछित आँकड़े प्राप्त किये जाते हैं, वे द्वितीयक स्रोत कहलाते हैं ।

आँकड़ो का संकलन

आँकड़ों का संग्रह करने के बाद आँकड़ों को व्यवस्थित करने की भी आवश्यकता होती है। इसे समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरण देखते हैं- गणित शिक्षिका कविता कक्षा-6 के चुने हुये 10 शिक्षार्थियों का गणित विषय में प्रदर्शन जानना चाहती थीं। कक्षाध्यापिका नमिता ने परीक्षा में प्राप्त अंकों की जो सूची कविता को दी उसमें अंक निम्न प्रकार से लिखे थे-

38,42,45,40,30,50,48,26,27,32.

इस रूप में लिखे अंकों से बच्चों का प्रदर्शन कैसा था?

गणित शिक्षिका कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सकी। अत: कविता ने स्वयं अंकपत्र से अंकों को सारणी रूप में निम्नांकित प्रकार से लिखा -

क्रमां.	नाम	50 में से प्राप्त अंक	क्रमां.	नाम	50 में से प्राप्त अंक
1.	आशीष	50	6.	सलमा	38
2.	अमिता	48	7.	रहमान	32
3.	मनीष	45	8.	अजय	30
4.	नीरज	42	9.	अरमान	27
5.	दीपि	40	10	नेहा	26

इस सारणी से कविता को यह सूचना मिल गई कि कक्षा में सबसे अच्छा प्रदर्शन किसका था। अन्य बच्चों में किसने कितने अंक प्राप्त किये, अच्छे प्रदर्शन के लिए किसे अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है, आदि

अभ्यास प्रश्न-

1.निम्नलिखित आँकड़ों को आरोही क्रम में रखिए :
4, 6, 8, 2, 12, 22, 29, 23, 25, 24, 32, 37, 42, 44, 9.

उत्तर माला कार्य पत्रक 23-
1-: 2, 3, 3, 4, 5, 6, 6, 7, 8, 9

2.किसी कक्षा की 10 बालिकाओं के प्राप्तांकों का प्रतिशत निम्नवत् है :
67, 55, 57, 42, 73, 75, 62, 61, 74, 33. आँकड़ों को अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए ।

3.एक ग्राम सभा में मनरेगा योजनान्तर्गत 20 व्यक्तियों (जॉब कार्डधारकों) द्वारा एक माह में किये गये कार्य के दिनों की संख्या प्रति व्यक्ति निम्नवत् है । इन आँकड़ों को अवरोही-क्रम में लिख ज्ञात कीजिए कि कितने व्यक्तियों ने 10 दिनों से कम काम किये ।
11, 8, 12, 12, 19, 16, 17, 24, 25, 21, 9, 11, 8, 12, 15, 9, 16, 8, 7, 3

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- कविता गुप्ता, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

आँकड़ों का अभिलेखन

आइये आज जानें कि आँकड़ों का अभिलेखन किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण- किसी मोहल्ले में 50 व्यक्तियों द्वारा पसन्द किए गये फ्रिजों के रंगों की सूचना मिलान चिह्नों का प्रयोग करके बनानी हैं।
इनके मिलान चिह्नों का प्रयोग करके निम्न सारणी तैयार की गई है : -

रंग	मिलान चिन्ह	फ्रिजों की संख्या
नीला	~~IIII~~ I	6
लाल	~~IIII~~ ~~IIII~~ II	12
क्रीम	~~IIII~~ ~~IIII~~ IIII	14
स्लेटी	~~IIII~~ ~~IIII~~ ~~IIII~~ III	18

इस सारणी के द्वारा निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है
1. लाल रंग का फ्रिज पसन्द करने वालों की संख्या कितनी है ?उ.- (12)
2. सबसे अधिक किस रंग का फ्रिज पसन्द किया गया ? उ.- (स्लेटी 18)
3. क्रीम रंग का फ्रिज कितने व्यक्तियों द्वारा पसंद किया गया ? उ.- (14)
4. सबसे कम किस रंग का फ्रिज पसंद किया गया ? उ.- (नीला6)

उत्तर माला कार्य पत्रक सं. 24-
1.) 2, 4, 6, 8, 9, 12, 22, 23, 24, 25, 29, 32, 37, 42, 44; 2.) 75, 74, 73, 67, 62, 61, 57, 55, 42, 33; 3.) 25, 24, 21, 19, 17, 16, 16, 15, 12, 12, 12, 11, 11, 9, 9, 8, 8, 8, 7, 3.; 7 व्यक्तियों ने 10 दिनों से कम कार्य किये ।

उदाहरण : निम्नलिखित महत्वपूर्ण आँकड़ो से टैली चिह्न लगाकर संख्याओं की बारम्बारता सारणी बनाइए ।
6, 7, 9,14, 9,15, 9,12,15,14,9,12, 14, 15,7,6,12,14,6,9
हल:
बारम्बारता सारणी

क्रम	संख्या	टैली चिह्न	बारम्बारता
1	6	III	3
2	7	II	2
3	9	~~IIII~~	5
4	12	III	3
5	14	IIII	4
6	15	III	3

अभ्यास कार्य -
1. निम्नलिखित आँकड़ों से टैली चिह्न लगाकर संख्याओं की बारम्बारता ज्ञात कीजिए ।
5, 6, 8, 13, 8, 5, 14, 11, 9, 13, 8, 11, 11, 6, 5.

2. टैली चिह्न लगाकर निम्नांकित संख्याओं की बारम्बारता सारणी बनाइए :
(i) 5, 2, 3, 4, 5, 3, 2, 4, 5, 4, 3, 2, 5, 5.
(ii) 16, 15, 16, 12, 13, 15, 14, 16, 13, 15, 12, 15

मिशन शिक्षण संवाद

अब आगे—

'राहुल तू निर्णय कर इसका,
न्याय पक्ष लेता है किसका।
कह दे निर्भय,जय हो जिसका,
सुन लूँ तेरी वाणी।'
'मां मेरी क्या बानी।
मैं सुन रहा कहानी।'
'कोई निरपराध को मारे,
तो क्या अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
'न्याय दया का दानी।'
'न्याय दया का दानी।
तूने गुनी कहानी।'

शब्दार्थ

आखेटक = शिकारी
आहत = घायल
निर्भय = बिना भय के
व्यापक = विस्तृत
सदय = दयालु
भक्षी = भक्षण करने वाला

व्याख्या—

"राहुल----------रहा कहानी।"

भाव– यशोधरा, राहुल से कहती है, बेटा तू ही इसका निर्णय कर न्याय किसकी तरफ होना चाहिए। तू निर्भय होकर बता कि जीत किसकी होनी चाहिए। मैं तुम्हारा भी न्याय सुन लूँ। राहुल कहता है कि माँ, मैं क्या बोलूँ।मैं तो कहानी सुन रहा हूँ।

"कोई निरपराध------- गुनी कहानी।"

भाव– यदि कोईअकारण बिना अपराध के किसी को मारे, तो क्या दूसरो को उसकी रक्षा नहीं करनी चाहिए? मारने वाले से बचाने वाला बहुत महान होता है। न्याय सदैव दया का पक्ष लेता है। इस पर माँ कहती है कि तुमने कहानी के मर्म को ठीक से समझा है।

उत्तरमाला क्रमांक–22

1– हंस को मारने वाले तथा बचाने वाले के बीच हुए विवाद के निर्णय में राहुल ने कहा कि रक्षक भक्षक से महान होता है।

2–"वर्ण-वर्ण----------------था पानी।"

भाव– उपवन में अनेक प्रकार के फूल खिले हुए थे। प्रातः काल मंद– मंद शीतल हवा से ओस के कण झिलमिल कर रहे थे। हवा में तालाब का पानी हिलोरे मार रहा था, अर्थात बगीचे का वातावरण बहुत ही बढ़िया और प्राकृतिक सुंदरता बिखेर रहा था।

भाषा के रंग व्याकरण के संग

1– निम्न वर्ग पहेली में समानार्थी शब्द चाहिए––

2– निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–
जैसे– हट करने वाला– हटी
रक्षा करने वाला, भक्षण करने वाला, पक्ष लेने वाला, जिसने अपराध किया हो, जिसे डर ना हो।

3– हिले–मिले, खर–शर और सदय–निर्दय शब्द–युग्मो मे एक जैसा तुक है। इसी प्रकार के तीन और समान तुक वाले शब्द– युग्म लिखिए।

प्र०1–

खग	गगन	पक्षी	नभ
आखेट	धनुष	तीर	शिकार
कोमल	मुलायम	कमल	कोयल
विवाद	निनाद	सुलह	झगड़ा

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- शशिवाला अग्निहोत्री स.अ.यू.पी.एस.अमेठी जदीद फर्रुखाबाद

मिशन शिक्षण संवाद

पाठ का सार–

(प्रस्तुत कहानी में एक डाकू के हृदय परिवर्तन की घटना को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है)

बाबा भारती नाम के एक साधु थे।उसके पास सुल्तान नाम का एक घोड़ा था, वह बहुत ही सुंदर और ताकतवर था। बाबा उस घोड़े से बहुत प्यार करते थे और उसकी सेवा करते थे। एक दिन सुल्तान के बारे में सुनकर उस इलाके का डाकू खड़क सिंह बाबा भारती के पास आया और उसने सुल्तान को देखने की इच्छा जताई। बाबा भारती ने गर्व के साथ खड़क सिंह को अपना घोड़ा दिखाया और उसके गुणों का बखान किया। खड़क सिंह घोड़े को देखकर आश्चर्य करने लगा, क्योंकि उसने इतना सुंदर और ताकतवर घोड़ा अब से पहले कभी नहीं देखा था।

उसे बाबा के भाग्य से ईर्ष्या हुई और वह सोचने लगा कि ऐसा घोड़ा तो मेरे पास होना चाहिए । उसने बाबा भारती से घोड़ा छीन ले जाने की बात कही । खड़क सिंह की इस बात से बाबा डर गए। देर रात भर बैठ कर घोड़े की रखवाली करने लगे। उन्हें हर समय खड़क सिंह के आने का डर सताने लगा ।एक दिन शाम के समय वे घोड़ा पर बैठकर कहीं घूमने जा रहे थे कि रास्ते में उन्हें एक गरीब अपाहिज पेड़ के नीचे बैठा मिला ।बाबा के पूछने पर उसने कहा कि मुझे तीन मील दूर एक गांव में जाना है ; लेकिन मैं चलने में लाचार हूँ ; आप मुझे अपने घोड़े पर बैठा कर वहाँ पहुंचा दें।

मां को अपने ---------------प्रसन्न होते थे।

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश हमार हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'हार की जीत' नामक पाठ से लिया गया है इस कहानी के लेखक सुदर्शन जी है।

व्याख्या– बाबा भारती अपने घोड़े सुल्तान को देखकर उसी प्रकार प्रसन्न हुआ करते थे, जिस प्रकार कोई माँ अपने बढ़ते हुए पुत्र, किसान अपने हरे-भरे खेत तथा साहूकार अपने देनदार को देखकर प्रसन्न हुआ करते है। यद्यपि बाबा भारती भगवान का भजन करते थे, परंतु भजन से बचे हुए समय में वे अपने घोड़ा की देखभाल करते थे। वे उसके दाने–,पानी हाथ से खरहरा करने एवं अन्य प्रत्येक सुख –सुविधाओं का ध्यान रखते थे।

शब्दार्थ

अर्पण = भेंट करना
असबाब = सामान
बाँका = सुंदर और बना था ना
कीर्ति = यश
अभिलाषा = इच्छा

उत्तरमाला क्रमांक–23

1– पक्षी,शिकार ,मुलायम, झगड़ा,
2– रक्षक,भक्षक,पक्ष्य, अपराधी, निडर।
3– जय-विजय, न्याय-अन्याय, जोर-शोर।

अभ्यास कार्य

1- बाबा भारती द्वारा की गई प्रार्थना का डाकू खड़क सिंह पर क्या प्रभाव पड़ा ?
2- इस कहानी के अंत में किसकी जीत और किसकी हार हुई ?
3- इस कहानी के द्वारा लेखक हमें क्या बताना चाहता है ?
4- कहानी के किस पात्र ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों?

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम-शशिवाला अग्निहोत्री स.अ. यू.पी.एस.अमेठी जदीद फर्रुखाबाद

अब आगे–

बाबा ने उस अपाहिज, को घोड़े पर बैठा लिया और वे स्वयं घोड़े की लगाम पकड़कर पैदल चलने लगे। अचानक बाबा को एक झटका देकर वह अपाहिज, घोड़े को दौड़ाने लगा। बाबा ने देखा, तो वे चीख़ उठे; क्योंकि वह अपाहिज डाकू खड़क सिंह था। बाबा ने उसे रोकना चाहा; लेकिन वह न रूका। बाबा ने उससे फिर कहा कि घोड़ा नहीं चाहिए; परंतु यह प्रार्थना है कि तुम किसी को इस घटना के बारे में मत बताना; क्योंकि इस घटना के बारे में सुनने के बाद लोग किसी गरीब पर भरोसा नहीं करेंगे। बाबा की यह बात सुनकर खड़क सिंह के मन पर उनकी सज्जनता और महानता का इतना प्रभाव पड़ा कि उसे अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ और रात के अँधेरे में वह घोड़े को बाबा के मंदिर में उसी जगह बाँधकर चला गया, जहाँ वह बँधा रहता था।

जीवन परिचय – सुदर्शन का वास्तविक नाम बद्रीनाथ भट था। इनका जन्म सन् 1895 ई० में पंजाब स्थित सियालकोट में हुआ था। कक्षा छह में ही उन्हनों ने अपनी पहली कहानी लिखी थी। कहानी के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, नाटक, जीवनी, बाल साहित्य, धार्मिक साहित्य, गीत आदि भी लिखे हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं 'पुष्पलता' 'सुप्रभात' 'परिवर्तन' 'पनघट' 'नगीना' 'भगवंती' आदि हैं। आपने अपनी कहानियों में आदर्श की प्रतिष्ठा की है सन 1967 में इनका देहावसान हो गया।

उत्तरमाला क्रमांक -24

1– डाकू खड़क सिंह का कठोर हृदय पिघल गया और उसकी मानवता जाग उठी।उसने घोड़ा वापस कर दिया।

2- कहानी के अंत में बाबा भारती हार कर भी जीत गए तथा खड़क सिंह जीत कर भी हार गया।

3- लेखक हमें बताना चाहता है कि व्यक्ति जन्म से बुरा नहीं होता; परिस्थितियों उसे बुरा बना देती हैं।

4- मुझे बाबा भारती के किरदार ने बहुत प्रभावित किया। उनकी बातों से उनकी महानता और सज्जनता का पता चलता है उन्हेंने अपने घोड़े से ज्यादा गरीबों और असहायो की चिंता की।

गतिविधि– चित्र को देखकर अपने विचार दस पंक्तियों में लिखिए-

शब्दार्थ

अस्तबल=घुड़साल
सहस्त्रो= हजारों
मिथ्या = झूठ
प्रयोजन= उद्देश्य
दुख की रेखा = थोड़ा सा दुख
नेकी के आँसू = दया के भाव

प्रोटीन:-

शरीर के लिए प्रोटीन बहुत जरूरी होता है और शरीर में मौजूद हर जीवित कोशिका को प्रोटीन की जरूरत होती है। प्रोटीन एक माइक्रोन्यूट्रिएंट है एवं शरीर को अपने रोजमर्रा के कार्य करने के लिए आहार में उच्च मात्रा में प्रोटीन की आवश्यकता होती है। संतुलित आहार में कुल कैलोरी का 15-35 फीसदी हिस्सा प्रोटीन का होना चाहिए।

प्रोटींस मुख्य रूप से एमिनो एसिड से बने होते हैं और ये कोशिकाओं को एनर्जी देते हैं। प्रत्येक ग्राम प्रोटीन में 4 कैलोरी होती है। प्रोटीन दो प्रकार के एमिनो एसिड से बनता है जिसमें पहला एमिनो एसिड है जिसे शरीर किसी भी खाद्य पदार्थ से बना सकता है लेकिन दूसरे प्रकार के अमीनो एसिड में शरीर को विशेष तौर पर प्रोटीनयुक्त चीजें खानी पड़ती है। 20 में से 9 एमिनो एसिड शरीर के लिए बहुत जरूरी माने जाते हैं और इन्हें आहार में जरूर शामिल करना चाहिए।

वैसे तो हर व्यक्ति को प्रोटीन की जरूरत होती है लेकिन किशोर और बच्चों को अधिक मात्रा में प्रोटीन की आवश्यकता होती है। इससे उनके शरीर का ठीक तरह से विकास हो पाता है। इसके अलावा प्रोटीन नई कोशिकाओं को बनाने एवं सुधार लाने का भी काम करता है। त्वचा, बालों, हड्डियों, नाखूनों, शरीर की कोशिकाओं, मांसपेशियों और अंगों को स्वस्थ रखने के लिए प्रोटीन अति आवश्यक है।

प्रोटीन का उपयोग हमारे शरीर को सवस्थ रखने के लिए बहुत ही जरूरी है। प्रोटीन के उपयोग के अनेकों फायदे हैं। प्रोटीन हमारें मसल्स बनाने में मदद करता है। वजन घटाने में प्रोटीन बहुत ही फायदेमंद है। प्रोटीन से ज्यादा मात्रा में कैलोरी बर्न होता है और हमारा शरीर उसे पचाने में अधिक समय लगाता है जिस कारण से भूख बहुत देर से लगती है और कम खाने की जरूरत महसूस होती है, जिस कारण से हमें वजन कम करने में मदद मिलती है। प्रोटीन का उपयोग हड्डियों, लिगामेंट्स और दूसरे संयोजी ऊतकों को स्वस्थ रखने में मदद करता है।

प्रोटीन के स्त्रोत:-

प्रोटीन की कमी को हम अपने खान पान के माध्यम से दूर कर सकते हैं। प्रोटीन के अच्छे और प्राकृतिक स्रोत दाल, आटा, कच्ची सब्जियां, दूध, दही, राजमा व लोबिया, सोयाबीन, मूंगफली, मेवा, अंडा, चिकन, मछली हैं।

अधिकता से नुकसान:-

प्रोटीन मानव शरीर के लिए बहुत ही जरूरी है। पर कभी-कभी उचित मात्रा से अधिक प्रोटीन का सेवन हमारे लिए नुकसान हो जाता है। प्रोटीन के अधिक सेवन से किडनी में पथरी, हृदय और लिवर सम्बंधित समस्या हो जाती है। अतः आप हमेशा प्राकृतिक रूप से की प्रोटीन की मात्रा को पूरा करें।

अभ्यास कार्य

1. सभी पोषक तत्वों में प्रोटीन का क्या महत्व है?
2. प्रोटीन का क्या कार्य हैं?
3. प्रोटीन के स्रोतों के नाम लिखों।
4. प्रोटीन की अधिकता से क्या समस्या आती हैं?
5. प्रोटीन के स्रोतों का चित्र बनाओ?

उत्तर माला

1. शरीर को ऊर्जा पोषक तत्वों से मिप्त हैं। वसा उनमे से एक हैं जो हमारे शरीर मे ईंधन की तरह काम करता हैं।
2. इससे शरीर को दैनिक कार्यों के लिए शक्ति प्राप्त होती है। इसको शक्तिदायक ईंधन भी कहा जाता है। एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए १०० ग्राम चिकनाई का प्रयोग करना आवश्यक है।
3. मक्खन, पनीर, दूध, आइसक्रीम, क्रीम, और वसायुक्त मांस जैसे खाद्य पदार्थों में पाया जाता है। ये कुछ वनस्पति तेलों जैसे नारियल तेल में भी पाया जाता है। वसा मछली, अखरोट, बादाम, मक्का और सोयाबीन के तेलों जैसे पदार्थों में पाया जाता है।
4. बहुत अधिक संतृप्त वसा के सेवन से हृदय रोग की समस्या होती है। अधिक मात्रा में संतृप्त वसा के सेवन से धमनियों में कोलेस्ट्रॉल बढ़ जाता है। अधिक वसा के सेवन से शरीर में कैलोरी की मात्रा बढ़ जाती है और आपको मोटापा जैसी समस्या भी हो सकती है जिसके कारण दिल की बीमारी और कुछ प्रकार के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है।
5. वसा की अधिकता से आमाशय की गतिशीलता में कमी आती हैं।

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- रंजना मिश्रा(स.अ.), उ० प्रा० वि० अहिबनपुर, महमूदाबाद, सीतापुर

विषय- गृहशिल्प पाठ- प्रोषक तत्व कक्षा - 6

प्रकरण- संतुलित आहार क्रमांक - 20

मिशन शिक्षण संवाद

आहारीय खनिज:- वे खनिज होते हैं, जो आहार के संग शरीर को मिलते हैं एवं पोषण करने में सहायक होते हैं। शरीर के लिए पाँच महत्त्वपूर्ण तत्त्व कैल्शियम, मैग्नेशियम, फ़ास्फ़ोरस, पोटाशियम और सोडियम अत्यावश्यक होते हैं। इनके अलावा अन्य महत्वपूर्ण किंतु सूक्ष्म मात्रिक तत्व हैं, क्रोमियम, तांबा, आयोडिन, लोहा, मैगनीज और जस्ता। इसके अतिरिक्त सेलेनियम भी अच्छे स्वास्थ्य बनाये रखने में एक उपयोगी है। अन्य सूक्ष्म मात्रिक तत्त्वों में सल्फ़र, निकल, कोबाल्ट, फ़्यूरीन, आंक्सीजन, कार्बन, हाइड्रोजन और नाइट्रोजन भी हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। ये सब मिलकर आहारीय खनिज कहलाते हैं। ये स्वास्थ्य के लिए उतने ही आवश्यक हैं, जितने विटामिन इत्यादि। लौह रक्त के लिए और कैल्शियम हड्डियों के लिए सम्पूरक के रूप में गर्भावस्था में महत्वपूर्ण है। आयोडिन की कमी गलगण्ड और मन्दबुद्धि, तथा मैग्नेशियम की कमी कैन्सर का कारण बन सकती है। मैगनीज और क्रोमियम का भी हृदय-रोग से संबध है। सामान्य रक्त-शर्करा के स्तरों को बनाए रखने के लिए क्रोमियम की आवश्यकता है। पाचन-तंत्र में जस्ते की कमी से गंजापन, भूख न लगना और यौन-दुष्क्रिया के परिणाम हो सकते है।

खनिज लवण अकार्बनिक पदार्थ हैं। मानव शरीर में कम-से-कम 29 तत्व पाए जाते हैं। यद्यपि खनिज से ऊर्जा प्राप्त नहीं होती है, परन्तु इनकी आवश्यकता शरीर की विभिन्न अभिक्रियाओं के लिए होती है।

खनिज लवण के कार्य:

लवणों के आयनों के कारण जीवद्रव्य में विद्युत चालकता होती है। इसी से जीवद्रव्य में संवेदनशीलता होती है।

अनेक रासायनिक प्रतिक्रियाओं में आयन बंधकों का कार्य करते हैं।

कई ऊतक, रक्त, हड्डियों, दाँतों आदि की रचना में ये भाग लेते हैं।

हृदय स्पंदन चेता संवाहन, पेशी संकुचन आदि में ये महत्वपूर्ण भाग लेते हैं।

आहारीय खनिज वे खनिज होते हैं, जो आहार के संग शरीर को मिलते हैं एवं पोषण करने में सहायक होते हैं। शरीर के लिए पाँच महत्त्वपूर्ण तत्त्व कैल्शियम, मैग्नेशियम, फ़ास्फ़ोरस, पोटाशियम और सोडियम अत्यावश्यक होते हैं। इनके अलावा अन्य महत्वपूर्ण किंतु सूक्ष्म मात्रिक तत्व हैं, क्रोमियम, तांबा, आयोडिन, लोहा, मैगनीज और जस्ता।

उत्तरमाला

1. प्रोटीन कई स्वास्थ्य लाभ देता हैं जैसे मांसपेशियों की ताकत देना, हड्डियां मजबूत होना, टिश्यू की मरम्मत, मेटाबॉलिज्म को बढ़ावा देना, हेल्दी प्रतिरक्षा प्रणाली का निर्माण करना. इसलिए, हमारी डाइट में पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन शामिल करना हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाता है.।
2.शरीर में प्रोटीन की ज़रूरत कोशिकाओं की मरम्मत और नई कोशिकाएँ बनाने के लिए होती है।
3. प्रोटीन वाले खाने -अंडा, मछली, डेयरी प्रोडक्ट,अनाज,दालें आदि।
4.ज्यादा मात्रा में प्रोटीन लेने से ह्रदय रोग, स्ट्रोक, कब्ज और किडनी से संबंधित समस्याएं हो सकती हैं।

अभ्यास कार्य

1.शरीर को खनिज लवण की आवश्यकता क्यों होती हैं?
2. खनिज लवण कितने प्रकार का होता हैं?
3. खनिज लवण की कमी से शरीर को क्या नुकसान होता हैं?
4. खनिज लवण का कार्य लिखो ।
5. स्वस्थ शरीर के लिए कौन कौन से तत्व आवश्यक हैं?

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम-रंजना मिश्रा, स०अ०, उ० प्रा० वि० अहिबनपुर, महमूदाबाद, सीतापुर

विषय- गृहशिल्प पाठ-पोषक तत्व कक्षा - 6

प्रकरण- संतुलित आहार क्रमांक- 21

मिशन शिक्षण संवाद

जल

संतुलित आहार के घटक

इसके घटकों में दो तरह के प्रमुख घटक आते हैं- 1. उपापचयी नियंत्रक तथा 2. ऊर्जा उत्पादक घटक

उपापचयी नियंत्रक

"जल"- जीवन के लिये जल अति आवश्यक है। जीवों के शरीर में जल की मात्रा 50 प्रतिशत से 85 प्रतिशत तक होती है। मनुष्य के शरीर का 70 प्रतिशत भार जल के कारण है। अपनी विशेष आण्विक रचना के कारण जल जीवों के शरीर के अंदर निम्न कार्य करता है-

जल एक आदर्श विलायक है। कोशिकाओं में अनेक पदार्थ जल में ही घुले रहते हैं।

बहुत से पदार्थ जीव के शरीर में और कोशिकाओं में अन्दर व बाहर की ओर जल में घुलित अवस्था में होता है।

बड़े अणु पानी में मिलने पर छोटे अणुओं में टूट जाते हैं।

यह कोशिकाओं में उपापचयी क्रियाओं की गति को तेज करता है।

जल में मुख्य कार्य-

संरचना-जीवद्रव्य का मुख्य अवयव है।

पदार्थों का परिवहन।

पसीने इत्यादि द्वारा शरीर के तापक्रम को कम करना।

मूत्र द्वारा अपशिष्ट पदार्थों का उत्सर्जन-समस्थैतिकता बनाये रखना।

अभ्यास कार्य

1. पोषक तत्वों में जल का क्या महत्व हैं?
2. जल का मुख्य कार्य क्या हैं?
3. संतुलित आहार के लिए पोषक तत्वों की क्या भूमिका हैं ?
4. जल के स्रोतों के नाम लिखो।
5. जल की कमी से क्या समस्या होती हैं?

संतुलित आहार

संतुलित आहार वह भोजन है, जिसमें विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ ऐसी मात्रा व समानुपात में हों कि जिससे कैलोरी खनिज लवण, विटामिन व अन्य पोषक तत्वों की आवश्यकता समुचित रूप से पूरी हो सके। इसके साथ-साथ पोषक तत्वों का कुछ अतिरिक्त मात्रा में प्रावधान हो ताकि अपर्याप्त मात्रा में भोजन मिलने की अवधि में इनकी आवश्यकता की पूर्ति हो सके। यदि इस परिभाषा को ध्यान से पढ़ें तो पायेंगे कि इनमें 3 मुख्य बातें हैं-

संतुलित आहार आहार में विभिन्न खाद्य पदार्थ शामिल होते हैं।

संतुलित आहार शरीर में पोषक तत्वों की जरूरतों को पूरा करता है।

संतुलित आहार अपर्याप्त मात्रा में भोजन मिलने की अवधि के लिये पोषक तत्व प्रदान करता है।

उत्तर माला:- 20

1. खनिज लवण- यह शरीर में कार्बनिक एवं अकार्बनिक अणुओं एवं आयनों के रूप में होते हैं।
2. गंधक - गंधकयुक्त एमीनों एसिड प्रोटीन निर्माण में सहायक हैं।

a. कैल्शियम- फॉस्फोरस के साथ मिलकर हड्डियों व दाँतों के निर्माण में सहायक।

b .फॉस्फोरस- कोशिका कला की संरचना हेतु फॉस्फोलिपिड का निर्माण।

c .सोडियम तथा पोटैशियम- कोशिका के अन्दर तरल की मात्रा को नियंत्रित करना।

d. क्लोरीन- पाचन रस में हाइड्रोक्लोरिक अम्ल का मुख्य अवयव।

e. लौह- ऑक्सीजन संवहन, हीमोग्लोबिन का प्रमुख भाग।f. आयोडीन- थॉयरॉक्सिन हार्मोन का प्रमुख अवयव, उपापचय पर नियंत्रण।g. मैंगनीज- वसीय अम्लों का ऑक्सीकरण।

h. मॉलिण्डेनम- नाइट्रोजन द्वारा नाइट्रोजन स्थिरीकरण में सहायक।

3.आयोडिन की कमी गलगण्ड और मन्दबुद्धि, तथा मैग्नेशियम की कमी कैन्सर का कारण बन सकती है। मैगनीज और क्रोमियम का भी हृदय-रोग से संबध है। सामान्य रक्त-शर्करा के स्तरों को बनाए रखने के लिए क्रोमियम की आवश्यकता है। पाचन-तंत्र में जस्ते की कमी से गंजापन, भूख न लगना और यौन-दुष्क्रिया के परिणाम हो सकते है।

4.यह भोजन के अकार्बनिक अव्यय है, जो शरीर के उपापचयी क्रिया को नियंत्रित करते हैं. यह शरीर के ऊतकों का निर्माण के लिए कच्चा पदार्थ और एंजाइम तथा विटामिन के आवश्यक अंग है.

5. स्वस्थ शरीर के लिए प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा,खनिज लवण और जल आवश्यक हैं।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- रंजना मिश्रा(स.अ.), उ०प्रा०वि०अहिबनपुर, महमूदाबाद, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

Types of pronoun

7) INTERROGATIVE PRONOUN (प्रश्नवाचक सर्वनाम)

The pronouns that are used for asking questions is known as interrogative pronoun. (वैसे सर्वनाम जो प्रश्न पूछने मे उपयोग करते है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है)

For Example:Who (कौन)

Which (कौन सा)

Where (कहॉ)

What (क्या) etc (आदि).

Who are you? (आप कौन हैं?)

Where are you? (आप कहां हैं?)

What are you doing? (आप क्या कर रहे हैं?)

8) DISTRIBUTIVE PRONOUN (वितरणवाचक सर्वनाम)

The pronoun which refers to the person or things taken one at a time is called as distributive pronoun. (वैसे सर्वनाम जो एक समय मे एक व्यक्ति या वस्तु का बोध कराता है उसे वितरणवाचक सर्वनाम कहते है)

For Example:Either (या तो)

Neither (न तो)

Each (प्रत्येक)

Each of these boys deserved a reward (इन लड़को में से प्रत्येक इनाम का हकदार है।)

We may go either today or tomorrow. (हम आज या तो कल जा सकते है।)

Exercise

Q. 1 What is Interrogative Pronoun?
Q. 2 What is Distributive Pronoun?

Answer

Ans 1.In this type of pronoun, we often use the words such as 'this', 'that'. It indicates the object that we try to describe.
Ans 2.Any, some, something etc.

Made by- Upasna Tyagi P. S. Bopara Muzaffarnagar 9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

TYPES OF PRONOUN

5) DEMONSTRATIVE PRONOUN (निश्चयवाचक सर्वनाम)
In this type of pronoun, we often use the words such as 'this', 'that'. It indicates the object that we try to describe. (कुछ ऐसे सर्वनाम जो निश्चितता की भावना का बोध कराता हो उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है)

For Example:This (यह)

That (वह)

This is my book. (यह मेरी किताब है।)

That is your pen. (वह तुम्हारा कलम है।)

6) INDEFINITE PRONOUN (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)
The pronouns used in the sentence which do not refer to any particular person or object. Pronouns that are used in a general way are called as indefinite pronoun.
(वैसे सर्वनाम जो अनिश्चय की स्थिति का बोध कराता है उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है)

Any (कोई)

Something (कुछ)

For Example:I need some money (मुझे कुछ पैसे चाहिए।)

Someone at the door (दरवाजे पर कोई है।)

Exercise

Q. 1 What is Demonstrative Pronoun?
Q. 2 What kinds of words we put in the category of Indefinite Pronoun?

Answer

1. Themselves - Reflexive Pronoun.
2. Which - Relative pronoun.
3. His Possessive Pronoun.
4. Herself - Reflexive Pronoun.

Made by- Upasna Tyagi P. S. Bopara Muzaffarnagar 9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

Types of pronoun

2) POSSESSIVE PRONOUN (स्वत्वबोधक सर्वनाम)
The pronoun which shows the possession or ownership is called possessive pronoun. (वैसा सर्वनाम जिसमे स्वयं के भाव का बोध हो उसे कहते है)
For example :like my, mine, hers, yours etc
This is my house. (यह मेरा घर है।)
This is my book. (यह मेरी किताब है।)

3) REFLEXIVE PRONOUN (निजवाचक सर्वनाम)
A reflexive pronoun is the action performed by the subject is on the subject itself. (वैसा सर्वनाम जिसमे निजत्व का बोघ हो और अधिपत्य का अहसास कराता हो उसे निजवाचक सर्वनाम कहते है)
for example: yourself, myself.
I will do it myself. (यह मैं खुद करूंगा।)
You have hurt yourself. (तुम अपने आप को चोट पहुँचाई है ।)

4) RELATIVE PRONOUN (संबंधवाचक सर्वनाम)
Relative pronoun are used to relate two clauses which share a common word. (कुछ ऐसे सर्वनाम जो सबंध का बोध कराता हो उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते है)
for example:that, who, which etc
The man is standing there. That man is my brother (जो आदमी खड़ा है। वो आदमी मेरा भाई है।)

Exercise

Find the Pronoun and name them

1Let them go there themselves.
2.The book which you gave is lost.
3.His book is the same as mine.
4.He queen herself gave me this present.

Answer

Ans 1.First person, second person and third person.
Ans 2.Second person.

Made by- Upasna Tyagi P. S. Bopara Muzaffarnagar 9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

योग

6. सर्वांगासन

विधि

1. पीठ के बल सीधा लेट जाएँ। पैर मिले हुए हों, हाथों को दोनों ओर बगल में सटाकर हथेलियाँ जमीन की ओर करके रखें।
2. श्वास अन्दर भरकर पैरों को धीरे-धीरे 30 अंश फिर 60 अंश और अन्त में 90 अंश तक उठाएँ। पैरों को उठाते समय हाथों से सहायता ले सकते हैं। इसके बाद लगभग 120 डिग्री पर पैर ले जाएँ। हाथों को कमर के पीछे लगाएं, कोहनियाँ भूमि पर टिकी हुई हों और पैरों को मिलाकर सीधा रखें। पंजे ऊपर की ओर तने हुए एवं आँखें बंद हों अथवा पैर के अँगूठों पर दृष्टि रखें।
3. पुनः पैरों को सीधा रखते हुए पीछे की ओर थोड़ा झुकाएँ। दोनों हाथों को कमर से हटाकर भूमि पर सीधा कर दें। अब हथेलियों से भूमि को दबाते हुए जिस क्रम से उठे थे उसी क्रम से धीरे-धीरे पहले पीठ और फिर पैरों को भूमि पर सीधा करें। जितने समय तक सर्वांगासन किया जाए, लगभग उतने ही समय तक शवासन में विश्राम करें।

लाभ

1. थायरॉइड तथा पीयूष ग्रन्थि को सक्रिय एवं स्वस्थ बनाता है एवं दमा के लिए भी उपयोगी है।

विशेष निर्देश - उच्च रक्तचाप, तीव्र कमर दर्द तथा हृदय रोगी यह आसन न करें।

7. पश्चिमोत्तानासन

विधि

1. दण्डासन में बैठ कर दोनों हाथों के अँगूठों व तर्जनी की सहायता से पैरों के अँगूठों को पकड़िये।
2. श्वास बाहर निकाल कर सामने झुकते हुए सिर को घुटनों के बीच लगाने का प्रयत्न कीजिए। घुटने-पैर सीधे भूमि पर लगे हुए तथा कोहनियाँ भी भूमि पर टिकी हुई हों। इस स्थिति में शक्ति के अनुसार आधे से तीन मिनट तक रहें। फिर श्वास छोड़ते हुए वापस सामान्य स्थिति में आ जाएँ।

लाभ-

सभी माँसपेशियाँ पुष्ट एवं मजबूत होती हंै तथा कद की वृद्धि होती है।

विशेष निर्देश -हृदय रोगी, तीव्र कमर दर्द तथा पेट के ऑपरेशन के रोगी इस आसन को न करें।

1. दोनों आसन से क्या लाभ है?
2. दोनों आसन का अभ्यास करें।

अभ्यास कार्य

उत्तरमाला -15

1. मांसपेशियाँ और जोड़ मजबूत होते हैं तथा रीढ़ की हड्डी लचीली होती है।
2. पेट की चर्बी को घटाता है, रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाता है, मांसपेशियों को मज़बूत एवं आँतों को सक्रिय करता है।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

योग

4. धनुरासन

विधि

1.पेट के बल लेट जाएँ। घुटनों से पैरों को मोड़ कर एड़ियाँ नितम्ब के ऊपर रखें। दोनों पैरों के घुटने एवं पंजे आपस में चित्रानुसार मिले हुए हों। 2. दोनों हाथों से पैरों को टखनों के पास से पकड़िये।

3. श्वास अन्दर भरकर घुटनों एवं जंघों को क्रमशः उठाते हुये ऊपर की ओर तानें, हाथ सीधे रहें। पिछले हिस्से के उठने के पश्चात पेट के ऊपरी भाग, छाती, गर्दन एवं सिर को भी ऊपर उठाइए। नाभि एवं पेट के आस-पास का भाग भूमि पर ही टिका रहे। शेष भाग ऊपर उठा होना चाहिए। शरीर की आकृति तने हुए धनुष के समान हो जाएगी। इस स्थिति में दस से तीस सेकेण्ड तक रहें।

4. श्वास छोड़ते हुये क्रमशः पूर्व स्थिति में आ जाइए। तीन-चार बार तक इस आसन को करें।

लाभ

1.मांसपेशियाँ और जोड़ मजबूत होते हैं तथा रीढ़ की हड्डी लचीली होती है।

2. पेट की स्थूलता कम होती है तथा पाचन शक्ति सुदृढ़ तथा गले के रोग नष्ट होते हैं।

विशेष निर्देश -हृदय रोग, उच्च रक्तचाप तथा कमर दर्द से ग्रसित रोगी यह आसन न करें।

5.चक्रासन

विधि

1.पीठ के बल लेट कर घुटनों को मोड़िए। एड़ियाँ नितम्बों के समीप लगी हुई हों।

2. दोनों हाथों को उल्टा करके कंधों के पीछे थोड़े अन्तर पर रखें इससे सन्तुलन बना रहता है।

3. श्वास अन्दर भरकर कमर एवं छाती को पीछे की ओर ले जाकर ऊपर उठाइए।

4. धीरे-धीरे हाथ एवं पैरों को समीप लाने का प्रयत्न करें, जिससे शरीर की चक्र जैसी आकृति बन जाए।

5. आसन छोड़ते समय शरीर को ढीला करते हुए कमर भूमि पर टिका दें। इस प्रकार 3-4 बार करें।

लाभ

1.पेट की चर्बी को घटाता है, रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाता है, मांसपेशियों को मज़बूत एवं आँतों को सक्रिय करता है।

विशेष निर्देश - पेट में सूजन, उच्च रक्तचाप, कमर दर्द, हार्निया तथा नेत्र दोष के रोगी इस आसन को न करें।

अभ्यास कार्य

1. धनुरासन और चक्रासन से क्या लाभ है?
2. दोनों आसन का अभ्यास करें।

मिशन शिक्षण संवाद

योग

2. हलासन

विधि-

1. सर्व प्रथम पीठ के बल लेट जायें और पैरों को परस्पर मिलाकर फैला लें।
2. साँस धीरे-धीरे अन्दर की ओर खींचते हुए पैरों को धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठायें।
3. दोनों हाथों की हथेलियों को बगल में जमाए रखें।
4. पैरों को घुटनों से बिना मोड़े पीछे की ओर ले आइये।
5. पैरों की उंगलियों को जमीन से स्पर्श करायें।
6. इस अवस्था में घुटने और पैर एक सीध में हांगे।

लाभ-

1. यह मेरू दण्ड को लचीला बना देता है तथा कब्ज को दूर कर पाचन शक्ति को बढ़ा देता है।
3. इसके अभ्यास से अकड़े हुए कन्धे, कोहनी, गठिया एवं पीठ दर्द ठीक हो जाता है।

विशेष निर्देश - हृदय रोगी, स्लिप डिस्क, स्पॉण्डलाइटिस के रोगी न करें।

3.कोणासन

विधि-

1. सर्व प्रथम अपने दोनों पैरों को अगल-बगल फैलाकर खड़े हो जायें। तत्पश्चात दायें हाथ को सिर के ऊपर ले जाते हुए जमीन के समान्तर सीधा रखें।
2. कमर का हिस्सा आगे-पीछे नहीं होना चाहिए।
3. इस आसन को 10 सेकेण्ड तक 4-5 बार कर सकते हैं।

लाभ-

1. इससे सीने का दर्द और पीठ का दर्द दूर हो जाता है तथा मानसिक तनावों से मुक्ति मिलती है।
2. इसके अभ्यास से रीढ़ की हड्डी में लचीलापन आ जाता है।

अभ्यास कार्य

1. हलासन और कोणासन का अभ्यास करें

मिशन शिक्षण संवाद

रचनात्मक अभ्यास:

आया दिन शनिवार का, गतिविधि के आधार का

शब्द अन्त्याक्षरी-

बच्चों! आज हम संस्कृत के शब्दों की अन्त्याक्षरी खेलेंगें।

👉 सबसे पहले कक्षा के बच्चों को दो समूहों में बाँट देगें।

👉 तत्पश्चात दोनों समूहों का नाम बच्चों की रुचि के अनुसार रखेंगें।

👉 बच्चों को गोल घेरे में बैठा लेगें।

👉 एक बच्चे से किसी शब्द को बोलने को कहा जाए।

👉 उदाहरण के लिए बच्चे ने 'खगः' शब्द का उच्चारण किया। दूसरा बच्चा उस शब्द का अन्तिम अक्षर 'ग' से 'गर्दभः' कहेगा।

👉 इसी तरह दूसरा बालक 'भ' से शब्द कहेगा- 'भल्लूकः'।

👉 फिर 'क' से 'कमलम्', 'म' से 'मूषकः', पुनः 'क' से 'कोकिलः'।

शब्द अन्त्याक्षरी से लाभ-

👉 बच्चे में शुद्ध उच्चारण करने की क्षमता का विकास।

👉 इस तरह से बच्चे खेल-खेल में ढेर सारे शब्द याद कर लेते हैं।

👉 परिवेशीय ज्ञान में वृद्धि क्योंकि बच्चा अपने आस -पास के परिवेश का सहारा लेता है शब्द खोजने के लिए।

👉 रुचिपूर्वक सक्रियता का समावेश।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- प्रवीणा दीक्षित Kabu Kasgani

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास-जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो और विग्रह करते समय प्रथमा और सम्बोधन को छोड़कर अन्य सभी विभक्तियों का लोप हो जाता है, वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

(क) कर्म तत्पुरुष-(को- विभक्ति का लोप)

ग्रामगत-ग्राम को गत(गया हुआ)

माखनचोर- माखन को चुराने वालों

मरणासन्न-मरण को आसन्न(पहुँचा हुआ)

सर्वप्रिय-सब को प्रिय

(ख) करण तत्पुरुष समास(विभक्ति 'से','के द्वारा का लोप)

रोगमुक्त-रोग से मुक्ति

कुलोत्तम- कुल से उत्तम

तुलसीकृत- तुलसी द्वारा कृत

रेखांकित-रेखा से अंकित

मनगढ़ंत- मन से गढ़ा हुआ

3-सम्प्रदान कारक-परसर्ग 'के लिए' या 'को' लोप-

परीक्षा केन्द्र - परीक्षा के लिए केन्द्र

हथकड़ी- हाथ के लिए कड़ी

देशभक्ति - देश के लिए भक्ति

विद्यालय - विद्या के लिए आलय

गृहकार्य-

👉 समास की परिभाषा उदाहरण सहित याद करें।

👉 तत्पुरुष समास को समझें व याद करके लिखें।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- प्रवीणा दीक्षित Kgbu Kasganj

मिशन शिक्षण संवाद

अव्ययी भाव समास (Adverbial compound)

निम्नलिखित समस्त पदों तथा उनके विग्रहों पर ध्यान दीजिए-

क- आजीवन-जीवन भर
ख- यथा शक्ति-शक्ति के अनुसार
ग-प्रतिदिन-प्रत्येक दिन
घ- भरपेट- पेट भरकर

इन सभी पदों का पहला पद 'आ', ' यथा'
'प्रति' 'भर' अव्यय हैं।
इन अव्ययों के योग से सम्पूर्ण पद अव्यय बन गया है।

जिस समास में पहला पद (पूर्वपद) अव्यय तथा प्रधान हो,उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं।

अव्ययी भाव समास के अन्य उदाहरण-

क- यथाविधि- विधि के अनुसार
ख- यथासमय-समय के अनुसार
ग-- अनुरूप- रूप के योग्य
घ- प्रतिकूल-इच्छा के विरुद्ध
ड़- आमरण- मरने तक
च- रातों-रात-रात ही रात में

गृहकार्य-
👉 अव्ययी भाव समास को उदाहरण सहित पढ़िए और उत्तर दीजिए।
👉 प्रतिकूल व हाथों-हाथ समास का विग्रह करें।

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम-प्रवीणा दीक्षित Kgbv Kasganj

विषय- पर्यावरण पाठ- कक्षा - 6,7,8

प्रकरण- गतिविधि क्रमांक- 24

मिशन शिक्षण संवाद

चित्र देख कर प्रदूषण का नाम बताओ।

1- _____

2- _____

3- _____

4- _____

उत्तरमाला क्रमांक - 23

1- ज्यामितीय
2- अंकगणितीय
3- भोजन
4- पर्यावरण

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- शबनम तौक़ीर(लखनऊ),शीला सिंह(ग़ाजीपुर) 9458278429

विषय- हमारा पर्यावरण पाठ- जनसंख्या एवं हमारा पर्यावरण कक्षा -जूनियर

प्रकरण- जनसंख्या एवं हमारा पर्यावरण क्रमांक- 23

मिशन शिक्षण संवाद

जनसंख्या वृद्धि का अर्थ

लोगों की संख्या बढने के कारण हमारे प्राकृतिक संसाधन कम पडने लगते हैं तो हम इसे जनसंख्या वृद्धि कहते हैं । जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ता है और आज का पर्यावरण प्रदूषण भी जनसंख्या वृद्धि की ही देन है।

जनसंख्या वृद्धि का कारण

भारत में आबादी बढ़ने के दो प्रमुख आम कारण हैं:
– जन्म दर का प्रतिशत मृत्यु दर से अधिक होना। हमने मृत्यु दर के प्रतिशत को तो सफलतापूर्वक कम दर दिया है पर यही कार्य जन्म दर के बारे में नहीं किया जा सकता।
– विभिन्न जनसंख्या नीतियों और अन्य उपायों से प्रजनन दर कम तो हुई है पर फिर भी यह दूसरे देशों के मुकाबले बहुत अधिक है।

जनसंख्या वृद्धि पर माल्थस के विचार

माल्थस के अनुसार खाद्य सामग्री में वृद्धि सदैव अंकगणितीय क्रम (जैसे 1,2,3,4,5.....) में होती है जबकि जनसंख्या वृद्धि सदैव ज्यामितीय क्रम (जैसे 2, 4, 8, 16....) में होती है।

हमारी मूलभूत आवश्यकताएं एवं जनसंख्या वृद्धि का असर

हमारी मूलभूत आवश्यकताएं हैं 1-रोटी 2- कपड़ा 3- मकान। जनसंख्या वृद्धि का इन बुरा प्रभाव पड़ता है।जनसंख्या के बढ़ने के कारण आज खाने के लिए भोजन की कमी और रहने के लिए आवास छोटे होते जा रहे हैं ।हमारी पृथ्वी कंक्रीट के जंगल में बदलती जा रही है । लोगों का जीवनस्तर भी गिरता जा रहा है ।

अभ्यास कार्य

1- जनसंख्या वृद्धि ____क्रम में होती है ।
2- खाद्यान्न वृद्धि ____क्रम में होती है ।
3- जनसंख्या वृद्धि से ____ में कमी होती है ।
4-जनसंख्या वृद्धि से हमारा ______ प्रभावित होता है ।

उत्तर माला पेज-22

1-इमारती, 2- वन, 3-वायु
4-वस्त्र और मकान, 5- भूमि

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- शीला सिंह (गाजीपुर) शबनम तौकीर (लखनऊ)

विषय- **पर्यावरण** पाठ- पर्यावरण असन्तुलन कक्षा -6,7,8

प्रकरण- **वन** क्रमांक- **22**

मिशन शिक्षण संवाद

वन हमारे रक्षक

जड़ी-बूटियाँ

1- वनों से हमें इमारती लकडियाँ,जड़ी बूटियाँ और उद्योगों के लिए कच्चा माल मिलता है।
2- वन्यजीवों का वास स्थान भी वन ही है।
3- वृक्षों की लोग पूजा करते हैं।
4- वनों से आदिवासी अपनी जीविका चलाते हैं।
5- वन हवा को साफ़ रखते हैं।
6- वनों से हमें ईधन के लिए लकड़ी मिलती है।
7- अनेक वृक्षों की लोग पूजा भी करते हैं।

वन्य जीवों का वास-स्थान

हम वनों के भक्षक

जनसंख्या बढ़ने के कारण वनों को काटकर घर व मार्ग बनाए जा रहे हैं। इससे वन नष्ट होते जा रहे हैं और अनेक प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो गई है। वनों को काटने से भूमि का कटाव बढ़ गया है। भूमि की उपजाऊ शक्ति भी कम हो गई है दुर्लभ पशु-पक्षियों एवं वनस्पतियों की प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही है।

वनों की कटाई

गृहकार्य

खाली जगह भरिये।
1- वनों से हमें _____ लकड़ियाँ मिलती हैं।
2-वन्यजीवों का वास-स्थान _____ हैं।
3- वन _____ को साफ़ रखते हैं।
4- वनों को काटकर _____ और _____ बनाये जा रहे हैं।
5- वनों को काटने से _____ का कटाव बढ़ रहा है।

उत्तरमाला क्रमांक 21

चित्र हमारे पर्यावरण की जनसंख्या वृद्धि की समस्या को संकेत कर रहा है

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- शबनम तौक़ीर(लखनऊ),शीला सिंह(ग़ाजीपुर) 9458278429

विषय- कला पाठ- फूल कक्षा 6,7,8

प्रकरण- आर्ट/कॉफ्ट क्रमांक- 25

मिशन शिक्षण संवाद

आओ बच्चों कुछ नया बनायें।

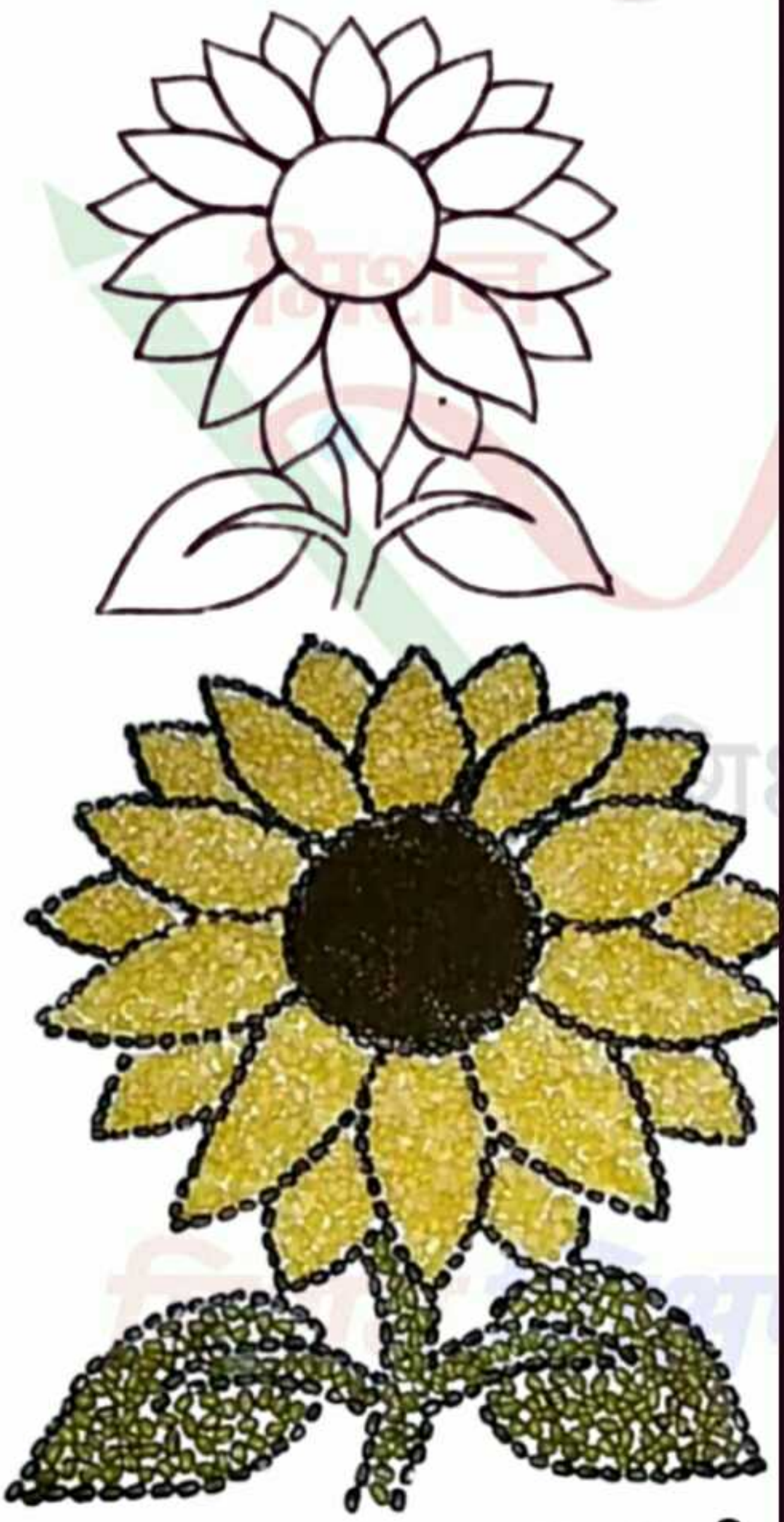

आवश्यक सामग्री--

पैंसिल,रबर,
फेविकोल,
घर मे उपलब्ध दालें।

विधी--

सबसे पहले पैंसिल की सहायता से फूल का चित्र बना लेते हैं। फिर चित्र के अनुसार फेविकॉल लगाकर काली दाल से आउटलाइन करके पीली दाल अंदर चिपका देते हैं पत्तियों मे हरी दाल चिपका कर चित्र को पूरा करते हैं।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- नीरा चौहान प्र०अ०फुगाना-2मुजफ्फरनगर

विषय- चित्रकला | पाठ- कनेर का फूल | कक्षा -UPS

प्रकरण-चित्रण ,रंग | क्रमांक - 25

मिशन शिक्षण संवाद

आज एक सुन्दर कनेर का फूल बनाएंगें ।

केवल अन्तिम रंगीन चित्र कॉपी पर बनाएं।

मिशन शिक्षण संवाद

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- चेतना सिंह(प्राथमिक विद्यालय इमरता)

विषय- चित्रकला पाठ-गणेश जी कक्षा -6,7,8

प्रकरण- चित्रण व रंग क्रमांक- 24

मिशन शिक्षण संवाद

आओ बच्चों,XYZ से गणेश जी बनायें।

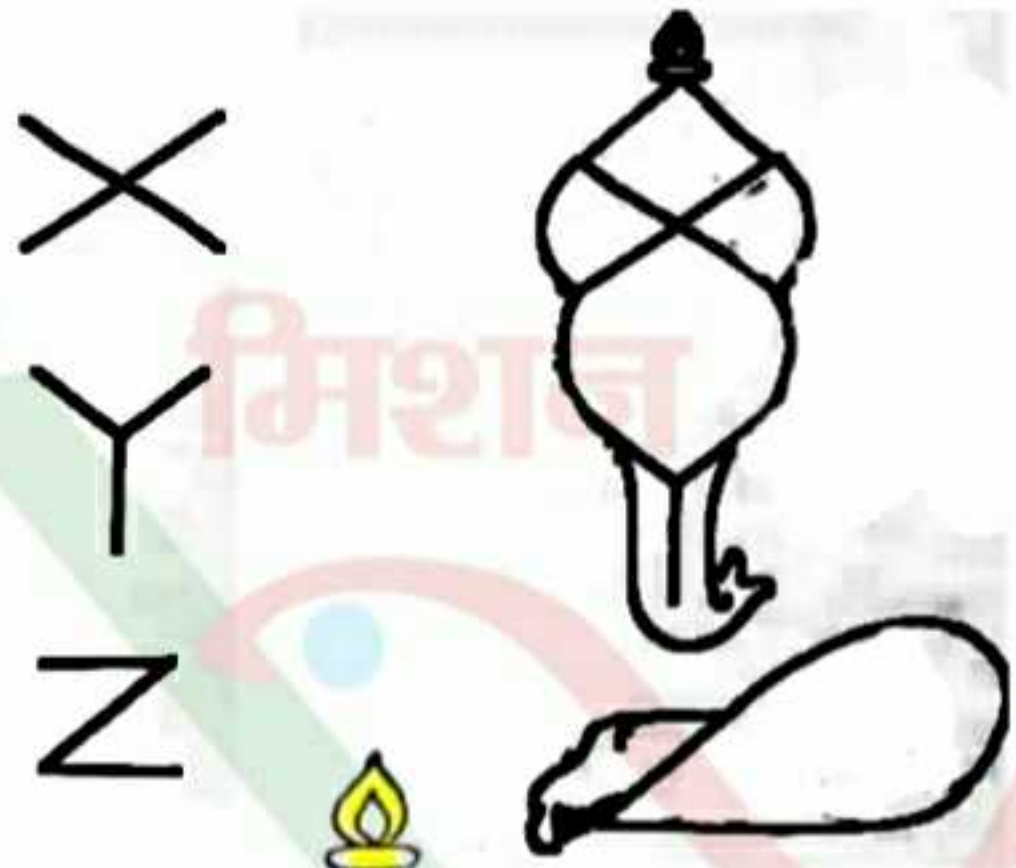

केवल रंगीन गणेश जी कॉपी पर बनायें।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम-नीरा चौहान प्रा०वि०फुगाना–2,मुजफ्फरनगर

आओ बच्चों, प्यारा सा गुलाब बनायें।

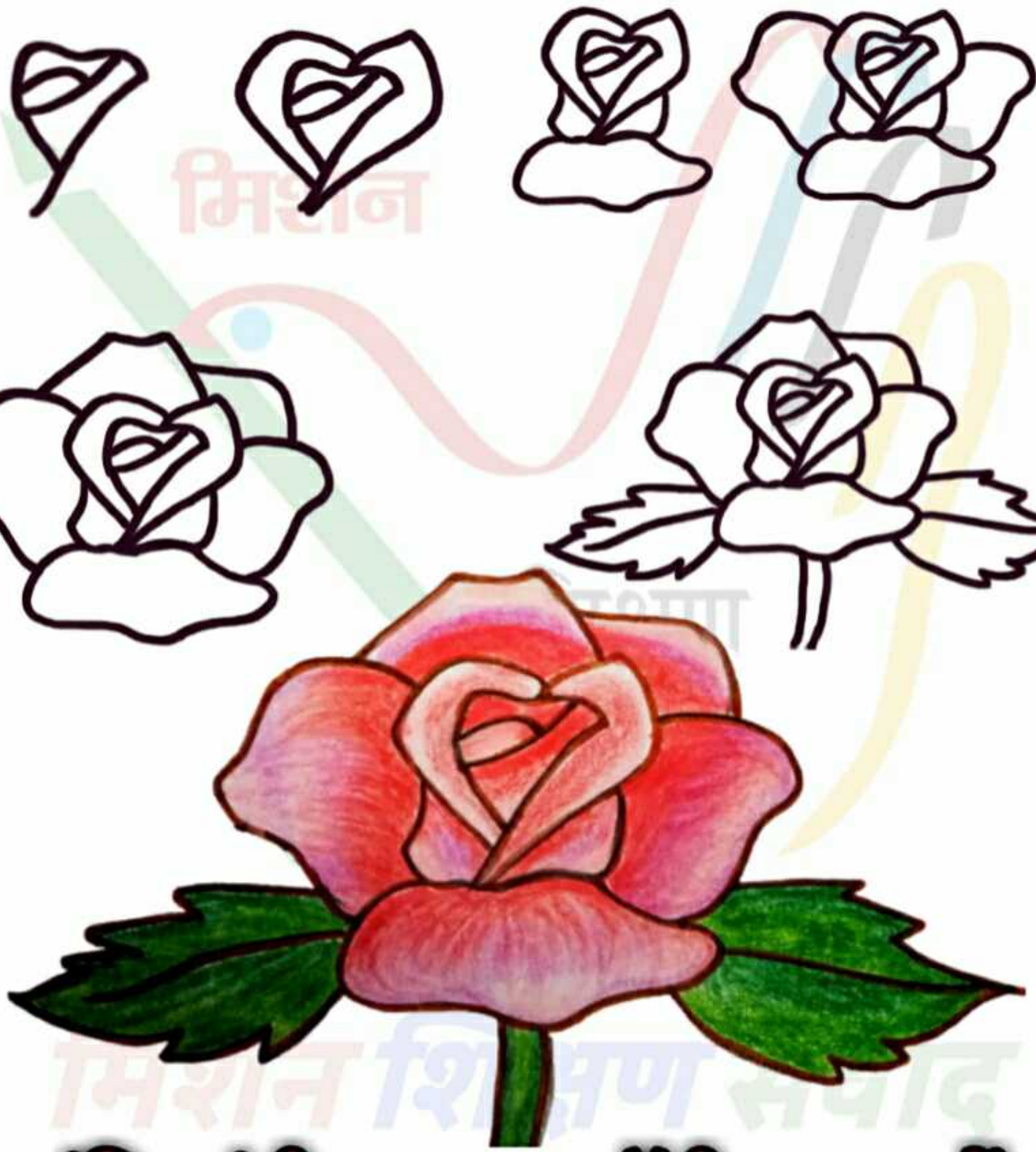

अंतिम रंगीन गुलाब कॉपी पर बनायें।

विषय- चित्रकला

पाठ- गुड़हल का फूल

कक्षा -UPS

प्रकरण-चित्रण ,रंग

क्रमांक - 23

मिशन शिक्षण संवाद

आज एक सुन्दर गुड़हल का फूल बनाएंगें ।

1

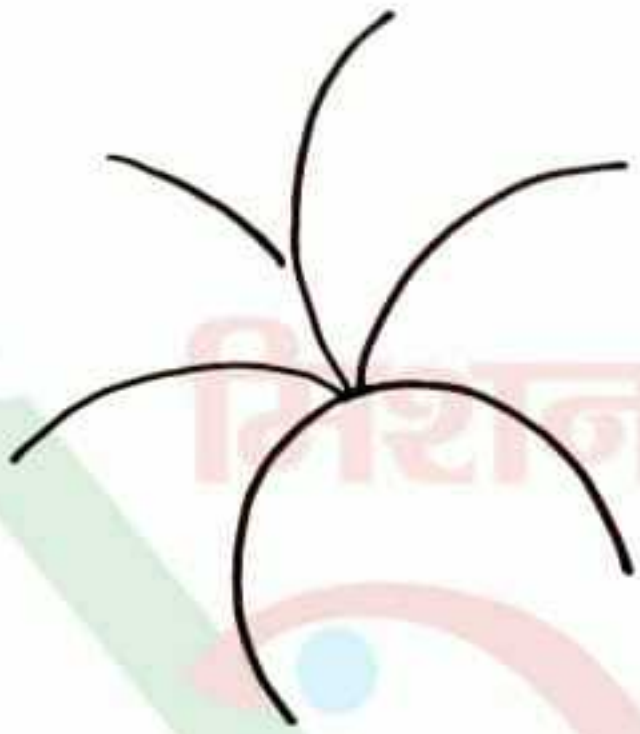

2

3

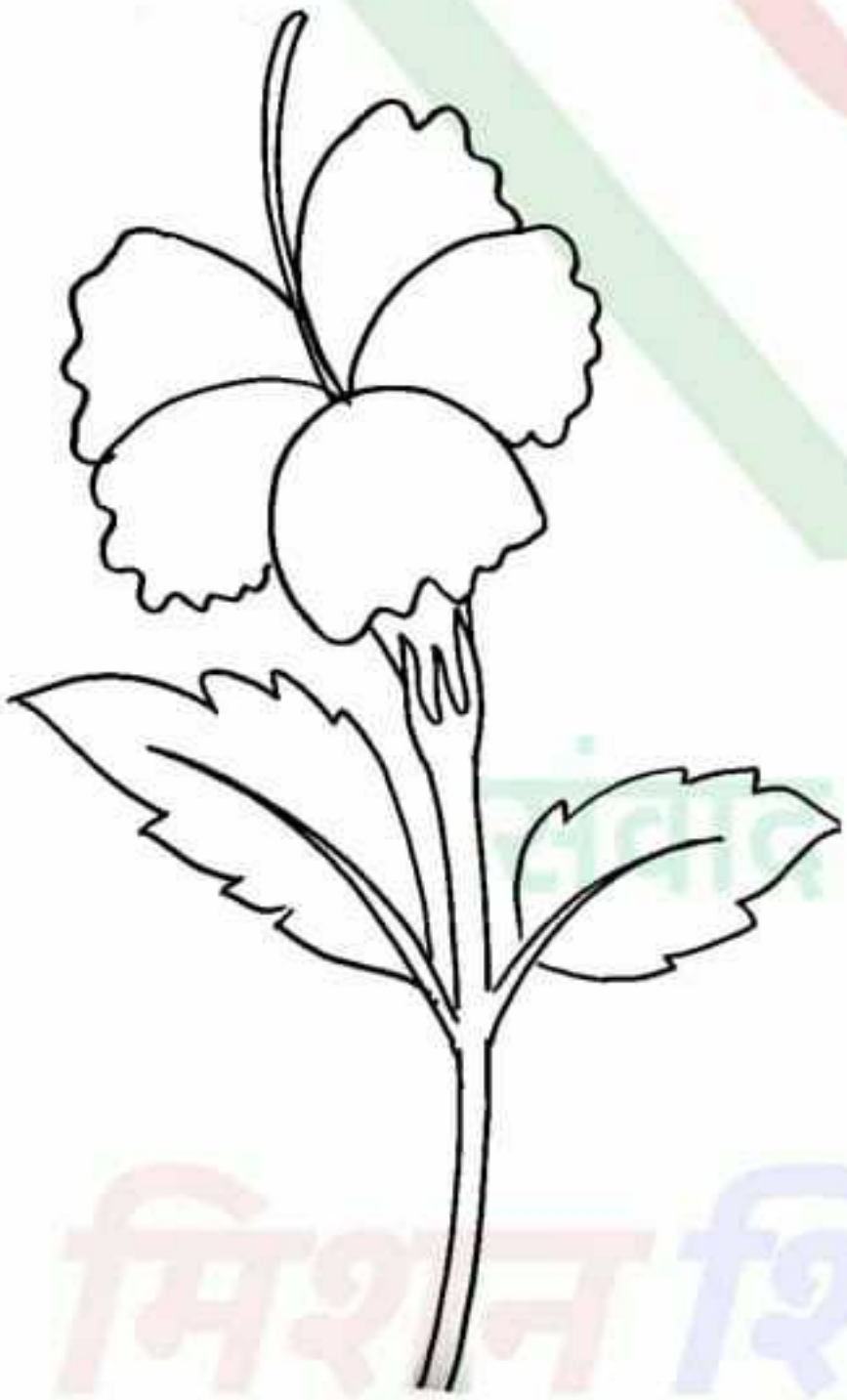

4

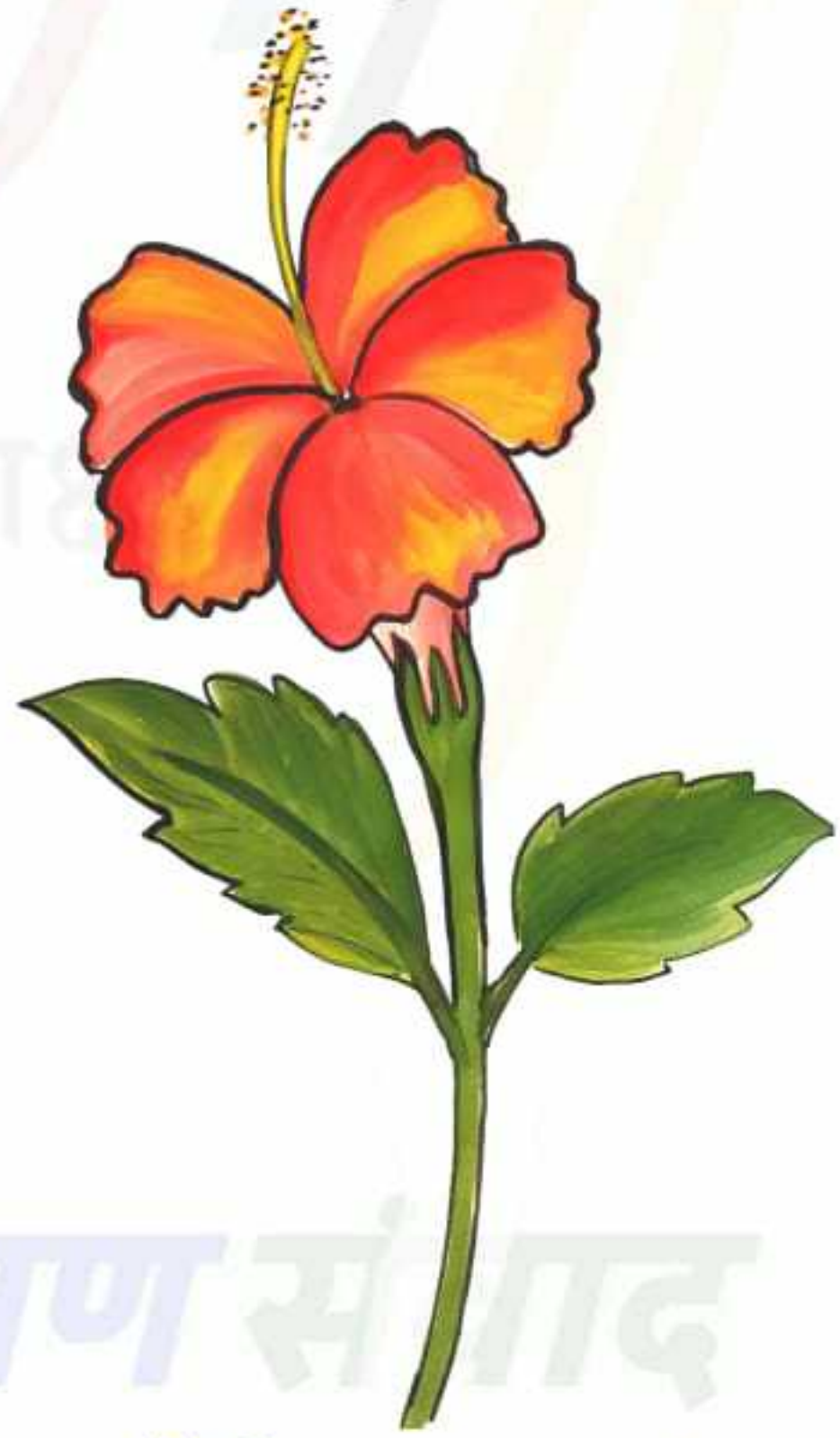

केवल अन्तिम रंगीन चित्र कॉपी पर बनाएं।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- चेतना सिंह(प्राथमिक विद्यालय इमरता) 9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

रचनात्मक गतिविधि

शब्द खेल-

👉 कक्षा में चार-चार छात्रों का समूह बनाइये।

👉 प्रत्येक छात्र छोटी-छोटी पर्ची बनाए।

👉 हर पर्ची में उपसर्ग और मूल शब्द लिखें।

👉 अब पर्चियों को एक काँच के जार में इकट्ठा कर लीजिए।

👉 अब बच्चे आकर एक- एक पर्ची उठायेगें और लिखे गए उपसर्ग व मूल शब्द को शुद्ध व तेज उच्चारण के साथ पढ़े।

👉 यहाँ हम बच्चे को संस्कृत शब्दों के साथ-साथ उसके हिन्दी शब्द भी सिखा सकते हैं।

👉 उपसर्ग तो निश्चय ही वह इस विधि से समझ लेगा।

शब्द खेल से लाभ-

👉 बौद्धिक क्षमता का खेल-खेल में विकास।

👉 सरलतम तरीके उपसर्ग समझ में आ जाना।

👉 कल्पना शक्ति का विकास

👉 शनिवार के दिन बाल सभा में भी ये शब्द ज्ञान सहायक है।

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- प्रवीणा दीक्षित Kgbv Kasganj 9458278429

विषय- संस्कृत व्याकरणम्   पाठ-   कक्षा -6, 7, 8

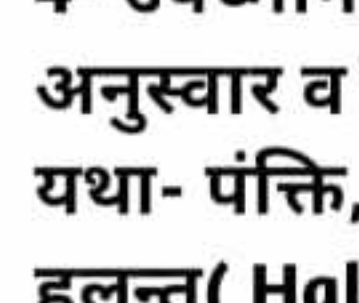

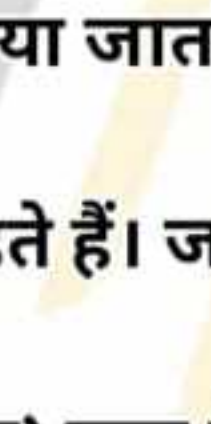

प्रकरण- अयोगवाह   क्रमांक- 07

अयोगवाह(Improper letters)

स्वर व व्यञ्जन वर्णों के अलावा'अयोगवाह' वर्णों का प्रयोग भी देखा जाता है। इसके अन्तर्गत अनुस्वार, विसर्ग , जिह्वमूलीय और उपध्मानीय ये वर्ण आते हैं।

1- अनुस्वार

2- विसर्ग (:)

3- जिह्वमूलीय-क

4- उपध्मानीय-प

अनुस्वार व विसर्ग को किसी न किसी वर्ण के साथ प्रयोग किया जाता है। यथा- पंक्ति, संयम, गतः, अतः आदि।

हलन्त(Halant)- संस्कृत भाषा में व्यञ्जन को 'हल्' भी कहते हैं। जब व्यञ्जन में कोई स्वर नहीं मिला होता
है तो स्वर रहित लिखने में उसके नीचे एक तिरछी रेखा (नमन्) लगा दी जाती है।इस रेखा को 'हलन्त वर्ण' भी कहते हैं; उदाहरण- क्, ख्, ग्, घ, आदि।

व्यञ्जनों में स्वरों का समावेश- व्यञ्जनों में जब स्वर मिलते हैं तो हलंत का लोप हो जाता है।

देखें! विभिन्न स्वरों के साथ व्यञ्जनों को निम्नवत् लिखा जा सकता है--

क् + अ = क , क् +आ =का, क्+ इ=कि,

क् + ई= की, क् +उ = कु, क् + = कू, क् + ऋ = कृ, क् + ॠ = कॄ, क् + ऌ = क्लृ,

क् + ए = के, क् + ऐ = कै, क्

+ ओ = को, क् + औ = कौ

विशेष- स्वर 'ऌ' का प्रयोग अब प्राय: समाप्त हो गया है।

गृहकार्य:

👉 क्ष, त्र, ज्ञ व्यञ्जनों के तीन-तीन शब्द लिखिये।

क्रमांक 06 का उत्तर

प्रण, प्रणाम, वीणा

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- प्रवीणा दीक्षितkabu Kasaani

मॉनिटर या वीडियो डिस्प्ले यूनिट(Monitor or VDU):-

मॉनिटर कंप्यूटर का वह आउटपुट डिवाइस है जो डाटा को प्रत्यक्ष प्रस्तुत करता है। यह एक टेलीविज़न की तरह दिखाई देता है। प्रारम्भ में केवल मोनोक्रोम अथवा श्वेत और श्याम मॉनिटर थे। धीरे -धीरे ऐसे मॉनिटर विकसित किये गये जो रंगो को प्रदर्शित कर सकते है। मॉनिटर कई प्रकार के है तथा उनकी प्रदर्शन क्षमता भिन्न -भिन्न है। ये क्षमता एडाफ्टर कार्ड (Adapter Card) नाम के विशेष सर्किट पर आधारित होते है। कुछ एडाफ्टर कार्ड (Adapter Card) इस प्रकार है।

Color Graphics Adapter (CGA)
Extended Graphics Adapter (EGA)
Vector Graphics Adapter (VGA)
Super Vector Graphics Adapter (SVGA)

Resolution:---

मॉनीटर का महत्वपूर्ण गुण –
रेजोल्यूशन:-- (Resolution) यह स्क्रीन के चित्र की स्पष्टता (Sharpness) को बताता है अधिकतर डिस्प्ले (Display) डिवाइसेज में चित्र (Image) स्क्रीन (Screen) के छोटे छोटे डॉट (Dots) के चमकने से बनते है स्क्रीन के ये छोटे छोटे डॉट (Dots) पिक्सल (Pixels) कहलाते है। यहाँ पिक्सल (Pixels) शब्द पिक्चर एलीमेंट (Picture Element) का संक्षिप्त रूप है स्क्रीन पर जितने अधिक पिक्सल होगें स्क्रीन का रेजोल्यूशन (Resolution) भी उतना ही अधिक होगा अर्थात चित्र (Image) उतना ही स्पष्ट होगा एक डिस्प्ले रेजोल्यूशन (Resolution) माना 640*480 है तो इसका अर्थ है कि स्क्रीन 640 डॉट के स्तम्भ (Column) और 480 डॉट की पंक्तियों (Row) से बनी है|

कुछ प्रसिद्ध Resolution ८००x६४० पिक्सेल , १०२४x७६८ पिक्सेल , १२८० x १०२४ पिक्सेल है।

गृहकार्य

प्र 1. मॉनिटर का दूसरा नाम क्या है?
प्र2. रिजॉल्यूशन का क्या अर्थ है?

उत्तरमाला (क्रमांक 18)

उ1. कुछ आउटपुट डिवाइस:--
१- मॉनिटर २- प्रिंटर
३- प्लॉटर
४- मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर
५- स्पीच सिंथेसिज़ेर्स

उ2. वह डिवाइस जिसमें कंप्यूटर के इनपुट डिवाइस द्वारा दिए गये निर्देशों को प्रोसेसिंग होने के बाद जिस डिवाइस में उसका परिणाम प्रदान किया जाता है वह आउटपुट डिवाइस कहलाती है।

9458278429
निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- भारती मांगलिक, बुलंदशहर

Types of Monitor (मॉनिटर के प्रकार)
CRT Monitor
LCD (Liquid Crystal Display)
LED (Light Emitting Diode)

1. CRT Monitor:----

CRT monitor ज्यादा Use होने वाला Output Device हैं जिसे VDU (Visual display Unit) भी कहते हैं इसका मुख्य भाग cathode Ray tube होती हैं जिसे Generally Picture tube कहते हैं । सी.आर.टी. तकनीक सस्ती और उत्तम कलर में आउटपुट प्रदान करती है ।

LCD (Liquid Crystal Display):--
टेक्नोलॉजी के विकास के साथ आज CRT मॉनिटर के बदले LCD Monitor प्रचलन में आ गए है यह Monitor बहुत ही आकर्षक होते हैं। यह Digital Technology हैं जो एक Flat सतह पर तरल क्रिस्टल के माध्यम से आकृति बनाता हैं यह कम जगह तथा कम ऊर्जा लेता है, अपेक्षाकृत कम गर्मी पैदा करता हैं यह डिस्पले पहले लैपटाप में Use होता था परन्तु अब डेस्कटॉप कंप्यूटर के लिए भी प्रयोग हो रहा हैं।

LED (Light Emitting Diode):--
LED मॉनीटर नवीनतम प्रकार के हैं। ये फ्लैट पैनल हैं, या थोड़ा घुमावदार। एलईडी मॉनीटर, CRT और LCD की तुलना में बहुत कम बिजली का उपयोग करते है और उन्हें पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है। एलईडी मॉनीटर के फायदे यह है कि वे हाइयर contrast वाले इमेज का उत्पादन करते हैं। अधिक टिकाऊ होते हैं और इसमें बहुत पतली डिज़ाइन होती है। कम गर्मी पैदा करते हैं। एकमात्र नकारात्मकता यह है कि वे अधिक महंगे हो सकते हैं।

उत्तरमाला (क्रमांक 19)
उ 1. विजुअल डिस्पले यूनिट
उ2. स्क्रीन के चित्र की स्पष्टता ही रिजॉल्यूशन है।

गृहकार्य
प्र 1. मॉनिटर के प्रकार बताओ?

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- भारती मांगलिक, बुलंदशहर
9458278429

विषय- संस्कृत व्याकरणम्   पाठ-   कक्षा - 6, 7, 8

प्रकरण- व्यञ्जन   क्रमांक- 7

मिशन शिक्षण संवाद

व्यञ्जन (हल्) Consonants

व्यञ्जन- जो वर्णों के उच्चारण करने में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, व्यञ्जन कहलाते हैं।व्यञ्जन 33 होते हैं।व्यञ्जनों को भी तीन भागों में बाँटा गया है-

(क) स्पर्श व्यञ्जन

(ख) अंत:स्थ व्यञ्जन

(ग) ऊष्म व्यञ्जन

(क) स्पर्श व्यञ्जन- वर्णमाला में 'क' से लेकर ' म' तक के व्यञ्जन स्पर्श व्यञ्जन कहलाते हैं। इन्हें पाँच वर्गों में बाँटा गया है। प्रत्येक वर्ग में पाँच वर्ण होते हैं। प्रत्येक वर्ग के प्रथम वर्ण के नाम पर उस वर्ग का नाम रखा गया है; जैसे-

'क' वर्ग, 'च' वर्ग, 'ट' वर्ग, ' त' वर्ग, 'प' वर्ग।

वर्ग (Class)	व्यञ्जन (Consonants)
क वर्ग-	क् ख् ग् घ् ङ
च वर्ग-	च् छ् ज् झ् ञ्
ट वर्ग-	ट् ठ् ड् ढ् ण्
त वर्ग-	त् थ् द् ध् न्
प वर्ग-	प् फ् ब् भ् म्

(ख) अन्त:स्थ व्यञ्जन-

जिन व्यञ्जन वर्णों के उच्चारण में श्वास का अवरोध कम होता है तथा जिह्वा मुख के किसी भाग का स्पर्श नहीं करती,उन्हें अन्त:स्थ व्यञ्जन माना जाता है-

य् र् ल् व्

(ग) ऊष्म व्यञ्जन-

जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुख बे गर्म वायु निकलती है,उन्हें ऊष्म व्यञ्जन माना जाता है-

श् ष् स् ह्

(ग) संयुक्त व्यञ्जन- एक से अधिक व्यञ्जनों के मेल से बने व्यञ्जनों को संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं।

क्ष - क् + ष् = कक्षा, दीक्षा

त्र - त् + र् = मित्र, शत्रु

ज्ञ - ज् + ञ् = ज्ञानी, विज्ञान

द्य - द् + य् = विद्या, विद्यार्थी

श्र - श् + र् = श्रमिक, श्रम

अभ्यास: (Exercise)

1- वर्णमाला को क्रम से याद करके उत्तर पुस्तिका पर लिखेंगें।

2- ऐसे तीन शब्द लिखेंगें जिनमें 'ण' का प्रयोग हुआ हो।

9458278429

निर्माण कार्य करने वाले शिक्षक का नाम- प्रवीणा दीक्षित Kgbu Kasganj